SHORT DURATION DISCUSSION

Police firing on dalits in Mumbai and Atrocities Committed on them on other parts of Maharashtra—Contd.

श्री गोविन्दराव आदिक (महाराष्ट्र): धन्यवाद उपसभापति महोदया, आपने फिर एक बार मुझे मौका दिया। महोदया, गत 11 जुलाई को मुम्बई में जो घटना हुई जहां पर परमपूज्य डा० बाबा साहब अम्बेडकर की प्रतिमा का विडंबन किया गया; उनकी प्रतिमा को जूतों का हार पहनाया गया और उससे वहां की जनता जो प्रक्षोभित थी उनके ऊपर महाराष्ट्र की सरकार की पुलिस ने गोली चलाकर 11 लोगों की हत्या कर दी। महोदया, देश के इतिहास में एक समय इतने बड़े पैमाने पर दलितों की हत्या होना शायद इस प्रकार की पहली मिसाल है। महोदया, इसके बारे में बहुत चर्चा हुई है। मैं तफसील में नहीं जाना चाहता हूं लेकिन जब हम यह चर्चा कर रहे हैं और मांग कर रहे हैं कि वहां की सरकार को भारत के संविधान धारा 356 के तहत बरखास्त किया जाए तब हमें यह भी पता करना जरूरी है कि दलितों की हत्या क्यों हुई, कैसे हुई? महोदया, आप देखेंगे कि यह सरकार जो ढाई साल के पहले महाराष्ट्र में सत्ता में आ गयी, यह ऐसी प्रवृत्तियों की सरकार है, ऐसे लोगों की सरकार है जो लोकतंत्र में विश्वास ही नहीं करती।

जो संविधान का अमल नहीं करना चाहते, संविधान के मुताबिक अपना कारोबार और व्यवहार नहीं करना चाहते, ऐसे लोकतंत्र विरोधी प्रवृत्तियों, शक्तियों और साम्प्रदायिक शक्तियां आज महाराष्ट्र की सरकार में सत्तारूढ़ होकर के बैठी हैं। यही कारण है कि यह सत्ता में आ गये। आप देखेंगे कि इनका जन्म ही अलोकतांत्रिक पद्धति से हुआ है और अलोकतांत्रिक पद्धति से सत्ता में आए हुए ये लोग हैं। महाराष्ट्र की जनता ने जो इनको वोट दिए हैं, उनको जो टोटल वोट वहां मिले हैं, महोदया उनको आप देखेंगी तो ध्यान में आएगा कि केवल 28 परसेंट वोट लेकर के ये दो पार्टियां वहां सत्ता में आई हैं। इनको जनता का बहुमत नहीं मिला है। लोगों ने जनमत का प्रदर्शन करके इनको सरकार नहीं दी है। उन लोगों का सत्ता में आना ही बिल्कुल अलोकतांत्रिक है और ऐसी ताकतें जब सत्ता में रहती हैं तो उनके कारोबार में संविधान का पालन हो, लोकतंत्र का पालन हो, यह अपेक्षा करना ही गलत हो सकता है।

महोदया, आज हम मांग कर रहे हैं कि महाराष्ट्र की यह जो सरकार है यह बिल्कुल अकार्यक्षम है, कानून और व्यवस्था को संभालने की ताकत इस सरकार में नहीं है। महाराष्ट्र की स्थिति आप देखेंगे तो आपको नजर आएगा कि वहां कानून और व्यवस्था की स्थिति बिल्कुल मौजूद नहीं है। देश के गृह मंत्री जी वहां गए थे। उन्होंने खुद जाकर के देखा है कि वहां क्या हो रहा है। जो घाट- कोपर में घटना हुई है उसमें 11 दलितों की हत्या हुई है, इतना ही सीमित रूप इसका नहीं रहा है। आप देखेंगे तो आपको एक सीरिज नजर आएगी, एक श्रृंखला नजर आएगी जहां पर आपको कानून और व्यवस्था दिखाई नहीं देगी।

महोदया, जैसे की 11 लोगों की हत्या घाटकोपर में हुई, बाबा साहब अम्बेदकर की प्रतिमा की मुम्बई के घाटकोपर में विडम्बना हुई, यह कोई पहली घटना नहीं है। इसके पूर्व अहमद नगर के श्रीरामपुर में भी बाबा साहब अम्बेदकर की प्रतिमा का विडम्बन किया गया था। इसके पहले भी आप देखेंगे कि औरंगाबाद, नांडेड़, अमरावती जैसे शहरों में भी इसी प्रकार के हादसे हुए हैं। इसकी एक सीरिज आपको नजर आ जायेगी, एक श्रृंखला आपको नजर आ जाएगी। ये लोग सत्ता में होने के बावजूद भी बाबा साहब अम्बेदकर की प्रतिमा का विडम्बन एक अलग ढंग से पूरे महाराष्ट्र में किए जा रहे हैं। मैडम, इतना ही नहीं, ये सरकार चलाने वाले जो सरकार में बैठे हुए हैं ये सरकार चला नहीं पा रहे हैं। ये सरकार को एक अलग प्रवृत्ति से चला रहे हैं यह भी आपकी नजर में आ जाएगा। मैडम, इस घटना के बाद आप देखेंगी की एक कवि ने आत्म-हत्या कर ली है, दलित वर्ग के लोगों ने अपनी आत्म हत्या करके इनके खिलाफ सबूत देने की कोशिश की है। महोदया, यह कानून और व्यवस्था का सवाल पैदा हुआ है। आज महाराष्ट्र की सरकार कुछ काम नहीं कर रही है। आज भी प्रश्नोत्तर के समय एक सवाल आया था जिस पर चर्चा नहीं हो सकी, लेकिन महोदया, आप देखेंगी कि एनटीसी की मिलों के बारे में एक प्रश्न यहां उठाया गया था। टेक्सटाइल्स मिनिस्टर भी आज यहां बैठे हुए हैं, वे इस सदन में मौजूद हैं।...**(व्यवधान)**... पुलिस फायरिंग से संबंधित है इसीलिए मैं कह रहा हूं। टेक्सटाइल मिल जो हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी और पुरानी इंडस्ट्री है और सबसे ज्यादा काम इसका मुम्बई में होता है, टेक्सटाइल्स मिनिस्टर यहां बैठे हैं, उनसे पूछिए कि क्या हो गया है। आज लाख डेढ़ लाख वर्कर्स की बे-सहारा होने की नौबत आ गई है।...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र): मैडम, ये विषय-वस्तु से अलग बोल रहे हैं। हमारे पास समय कम है।....

उपसभापति: देखिए यह उनका समय है वह कुछ भी बोल रहे हैं लेकिन अनपार्लियामेंट्री नहीं बोल रहे हैं। किसी को बुरा नहीं कह रहे हैं। आप क्यों खफा हो रहे हैं। आपका समय भी आएगा इसलिए इनको बोलने दीजिए।...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम: मैडम, विषय वस्तु से अलग बोल रहे हैं।....

उपसभापति: नहीं, विषय-वस्तु है उनकी। वह जो बोल रहे हैं वह विषय से संबंधित है। जो वह बोल रहे हैं, ठीक है।

श्री गोविन्दराव आदिक: महोदया, महाराष्ट्र के मुम्बई शहर की मिलों में जो लाख डेढ़ लाख वर्कर्स काम करते थे, उन मिलों की हालत बहुत खराब है। ये मिलें चल नहीं रही हैं इसलिए कामगार, वर्कर्स, मजदूर सब बेकार हो गए हैं।

टेक्सटाईल मिनिस्टर जी से जब हमने पूछा कि उन मिलों को कब रिवाइव कर रहे हैं तो वह कहते हैं कि महाराष्ट्र सरकार जब तक सरप्लस जमीन के बारे में फैसला नहीं करेगी तब तक हम कुछ नहीं कर सकते। दो साल से महाराष्ट्र सरकार ने यह फैसला रोक कर रखा हुआ है। वह पिछले दो सालों से मिलों की जमीन के बारे में कोई फैसला नहीं कर रही है। ढाई साल हो गए हैं और मिलों की सरप्लस जमीन के बारे में कोई फैसला नहीं कर सकी है तो इससे यह पता लगता है कि उनका शासन किस तरह से काम कर रहा है। इसके बारे में कोई और मिसाल देने की मुझे जरूरत नहीं है।

महोदया, वहां पर जो घटनायें हो रही हैं उनका जिक्र करना बहुत डिफिकल्ट है। लेकिन जब गृह मंत्री मुंबई में मौजूद थे, उसी दिन लीलावती अस्पताल में क्या हादसा हुआ, इसको वह भी जानते हैं और पूरा देश भी जानता है। लीलावती अस्पताल के डाक्टर को शिव सेना के कार्यकर्ताओं ने हमले का शिकार बनाया। उन पर हमला किया और उनके मुंह में कालिख पोत दी। हाफ किन इंस्टीट्यूट, जो एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति का इंस्टीट्यूट है जहां वैक्सीनस बनती है, अलग-अलग तरह की वेल्यूएबल वैक्सीन जहां बनती हैं, उस हाफकिन इंस्टीट्यूट के डाइरेक्टर के पास शिव सेना के लोग गए और उनको बाहर खींचा, उनके साथ मार-पीट की तथा उनके मुंह पर काला रंग लगा दिया। इसके बाद वें उनको उठाकर शिव सेना प्रमुख बाल ठाकरे के पास ले गए और कहा कि ठाकरे साहब, ये हाफकिन इंस्टीट्यूट के डाइरेक्टर हैं, ये हमारी बात नहीं सुनते, इनको आप देखें। बाला साहब ने उनको जो कुछ कहना था उनको कह दिया। वे उनको गवर्नमेंट के आरोग्य मंत्रालय नहीं ले गए, या जो इस विभाग से संबंधित मंत्री थे उनके पास नहीं ले गए लेकिन बाला साहब ठाकरे के पास ले गए। कौन होते हैं यह बाला साहब ठाकरे? महाराष्ट्र की सरकार से उनका क्या वास्ता है? अगर इस पर आप गौर करें तो आप पता कर सकते हैं कि वहां पर किस तरह से शासन चल रहा है। वहां पर यह जो घटना हुई इसके ऊपर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है। कहते हैं कि अभी एफ० आई० आर० दाखिल की है और इन्कवायरी चल रही है। लेकिन हमें भरोसा है कि जब तक यह सरकार वहां बैठी है तब तक कुछ होने वाला नहीं है। वहां पर जज लोगों को धमकियां दी जा रही हैं, गवर्नमेंट आफिसर्स को धमकियां दी जा रही हैं और विभिन्न पोलिटिकल पार्टीज के जो वरकर्स हैं, नेता हैं उनको भी धमकियां मिल रही हैं। वहां पर हर एक व्यक्ति इनसिक्युअर फील कर रहा है, वहां कोई सुरक्षितता नहीं है। जब तक यह सरकार वहां बनी रहेगी तब तक यह हालात वहां पर कायम रहेंगे।

मैडम, इससे भी आगे जाकर मैं आपसे और भी कुछ कहना चाहूंगा। पत्रकारों के ऊपर आप देखें कितने अन्याय हो रहे है। देशोन्नती नाम का एक पेपर जो अंकोला से निकलता है, वहां शिव सेना के नेता लोग गए। अखबार ने उनके खिलाफ कुछ लिख दिया, इसलिए उनके खिलाफ उन्होंने कार्यवाही करनी शुरू कर दी, उनके साथ मार-पीट की और फिर उनके दफ्तर में तोड़-फोड़ कर दी। महानगर, जो दैनिक मुंबई से निकलता है उसके साथ भी यही हुआ जो देशोन्नती के साथ हुआ। सारे पत्रकारों को धमकी देने का काम पिछले ढाई सालों से यह लोग कर रहे हैं। सत्ता इनके हाथ में है, पुलिस इनके हाथ में है इसलिए ये कुछ भी कर सकते हैं और इनका कोई कुछ नहीं कर सकता, यह इनको विश्वास है। इसलिए वहां पर कानून-व्यवस्था पूरी तरह चकनाचूर हो गयी है। महोदया, इसीलिए हम वहां पर 356 लागू करने की मांग कर रहे हैं।

हम यह कह रहे हैं कि यह सरकार काम नहीं कर सकती है। मैं एक मिसाल आपको देना चाहूंगा। गृह मंत्री जी यहां मौजूद हैं, इसके लिए मैं उनका आभारी हूं।

वे मुंबई गए और वहां उन्होंने मुख्य मंत्री, गवर्नर और आफिसरों से बात की या नहीं हमें मालूम नहीं। लेकिन हमने एक बात प्रेस में जरूर पढ़ी है और जिसका जिक्र गृह मंत्री ने यहां पार्लियामेंट में भी किया है कि वे बाला साहब ठाकरे से मिले थे। वहां बाला साहब ठाकरे और उनके दो नुमाइन्दे गृह मंत्री से मिलने आते हैं। महोदया, वहां विपक्ष के नेता भुजबल, जो हमारी पार्टी के हैं, उनके घर पर हमला हुआ, उनके घर पर तोड़-फोड़ की गई और वहां सब सत्यानाश कर दिया। भुजबल जी खुद बाल-बाल बचे, नहीं तो वे आज जिंदा नहीं दिखाई देते, इतना बड़ा हमला उनके ऊपर हुआ। जब ठाकरे साहब और उनके दो नुमाइन्दे गृह मंत्री से मिलते हैं तो अपनी चर्चा में वे इस घटना का समर्थन करते हैं। भुजबल जी के घर पर जो हमला हुआ, विपक्ष के नेता के घर पर जो हमला हुआ उसका समर्थन ठाकरे जी करते हैं और गृह मंत्री जी से कहते हैं कि यह इस बार हो गया है आगे नहीं होगा, इसकी चिंता न की जाए। गृह मंत्री जी कहते हैं ठाकरे जी ने हमको आश्वासन दिया है कि आगे ऐसा नहीं होगा। कौन होते हैं ये ठाकरे जो अपने दो बेटों के साथ गृह मंत्री के साथ चर्चा करते हैं? उनका क्या अधिकार है? कौन सा कांस्टिट्यूशनल आधार उनको मिला हुआ है?

गृह मंत्री कानून की कौन सी धारा के तहत, कांस्टीट्यूशन की कौन सी धारा के तहत उनके साथ बातचीत करते हैं, यह हमारी समझ में नहीं आया है। यह सारी बातें वहां असंसदीय बातें हो रही हैं, असंसदीय तरह से काम हो रहा है, रिमोट कंट्रोल के साथ गवर्नमेंट चलाई जा रही है। सामान्य जनता पर अत्याचार हो रहा है, पत्रकारों के ऊपर अन्याय हो रहा है विपक्ष के नेता जो एक पार्लियामेंटरी इंस्टीट्यूशन है, एक संस्था बनी है, उस पार्लियामेंटरी इंस्टीट्यूशन को खत्म करने की कोशिश यहां हो रही है। और हमारी केन्द्रीय सरकार बड़े आराम से यह सब देख रही है । यह कहा जा रहा है कि गृह मंत्री यह कहते हैं कि कानून-व्यवस्था वहां ठीक नहीं है फिर भी कार्यवाही करने जैसी स्थिति नहीं है। मैं गृह मंत्री जी से यह पूछना चाहूंगा कि क्या हमारे भुजबल जी का अंत हो जाता तब आप खुश हो जाते और कोई कार्यवाही करते? हमारे विपक्ष के नेता मधुकर जिचड की हत्या वहां होती तब आप शान्त हो जाते? तब आपको लगता कि वहां स्थिति खराब हो गई है। महानगर के संपादक और देशोन्नत्ति के संपादक की हत्या हो जाने के बाद आप सोचेंगे। आज 11 दलितों की हत्या हो गई है। क्या आप अमरावती, अकोला और अहमदनगर में दलितों की हत्या होने के लिए रुके हुए हैं, किसलिए रुके हुए हैं, हमें यह बताइये? हम जानना चाहते है कि कब तक आप रुके रहेंगे? जब तक आप रुके रहेंगे तब तक यह अन्याय और अत्याचार बढ़ते रहेंगे।

[उपसभाध्यक्ष (श्री जॉन एफ० फर्नांडिस) पीठासीन हुए]

श्री गोविन्दराव आदिक: उपसभाध्यक्ष महोदय, आज महाराष्ट्र की गरीब जनता के मुंह में एक ही स्लोगन पैदा हो गया है और वह स्लोगन है* अगर आप चाहते हैं कि यह राज इस तरह से चलता रहे **(व्यवधान)** यह मैं नहीं कह रहा हूं **(व्यवधान)**

SHRI SATISH PRADHAN: Sir, I am on a point of order. *(Interruptions)*

PROF. RAM KAPSE (Maharashtra): Sir, Iam on a point of order.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Yes, what is it?

PROF. RAM KAPSE: My point of order is that Shri Govindrao Adik referred to the Chief Minister of Maharashtra, Shri Manohar Joshi and the Deputy Chief Minister of Maharashtra, Shri Gopinath Munde, as * in this House. They are not present in this House to reply to it. *(Interruptions)*

SHRI SUSHILKUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE (Maharasthra): He has not said it. He is only telling us what slogans people in Maharashtra are raising.

SHRI GOVINDRAO ADIK: I am just...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Mr. Adik, just one minute. *(Interruptions)* Mr. Adik, if you have uttered this word referring to somebody else, then I don't think it should go on record. *(Interruptions)*

SHRI GOVINDRAO ADIK: Sir, I agree with whatever you say. But I haven't said anything of my own. I am just bringing the situation prevailing in the State before this House. I am only

---

*Expunged as ordered by the Chair.

pointing out what is happening in the State. It is not my intention... *(Interruptions)*

PROF. RAM KAPSE: Sir, it should be expunged.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): I have already said that it should be expunged. *(Interruptions)* I have already said, if it is on record it should be expunged.

SHRI SUSHILKUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE: These are the slogans that people are raising there.

SHRI GOVINDRAO ADIK: It is not a slogan that I have raised it in this House. This is what people are shouting outside.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): But you should maintain the decorum in the House. You should not repeat here what others are saying about elected representatives of the State. Please continue.

SHRI GOVINDRAO ADIK: Sir, my intention was just to point out the seriousness of the situation because the hon. Home Minister is sitting here and he is not yet convinced about the failure of the law and order situation in the State. That is why I wanted to point it out to him. That was the intention. I don't want to make any allegations against the Chief Minister or the Deputy Chief Minister.

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कहना चाहता था कि वहां एक स्थिति आज पैदा हो गई है ऐसी स्टेट में जहां कानून-व्यवस्था का कुछ पता नहीं रहा है, जहां लोगों के दिल में इनसिक्युरिटी की भावना पैदा हो गई है ऐसा राज है जहां संसद की जो परम्पराएं हैं, उनको भी अमल में नहीं लाना चाहते हैं, जहां संविधान पर अमल नहीं हो रहा है, ऐसे कारोबार करने वाली सरकार को क्या हम बर्दाश्त करने वाले हैं। अगर हम इस तरह से उनको बर्दाश्त करेंगे तो महाराष्ट्र में शान्ति और अमन जो इससे पहले पैदा हुआ था, तरक्की की तरफ जो स्टेट आगे जा रही है, नम्बर एक स्टेट बन गई थी, उस स्टेट की हालत बहुत खराब हो गई है। वहां अशान्ति है, सुरक्षा नहीं है, कानून-व्यवस्था का कोई पता नहीं है, विपक्ष के नेता को अगर सिक्युरिटी नहीं मिल सकती है तो सामान्य नागरिक को कौन सी सुरक्षा मिल सकती है? यह सवाल आज लोग खुले आम पूछ रहे हैं। महोदय, इसी कारण हम लोग चाहते है कि जहां कानून और व्यवस्था पूरी खत्म हो गयी है ऐसी स्टेट में अगर इस सरकार को काम करने देने का इरादा गवर्नमेंट आफ इंडिया का है तो वह लोकतंत्र के विरोध में होगा, लोकतंत्र और संविधान के विरोध में होगा। इसलिए मैं आपके मार्फत, इस सदन के मार्फत केन्द्र सरकार को यह निवेदन करना चाहूंगा, प्रार्थना करना चाहंगा कि इस बारे में आप विलम्ब नहीं कीजिए। अगर आप विलम्ब करेंगे तो एक जगह पर ऐसी घटनाएं नहीं बल्कि और भी जगहों पर ऐसी घटनाएं घटेंगी। वहां एक माहोल ऐसा ही पैदा किया जा रहा है। इससे पूरी स्टेट और स्टेट की आबादी को तकलीफ होगी। यह ध्यान में लेकर आप तुरंत संविधान की धारा 356 के तहत कार्यवाही करें और वहां पर सरकार को बर्खास्त करें। इतना ही कहकर मैं आपको धन्यवाद देकर अपना भाषण समाप्त करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Shri N. Thalavai Sundaram. Your party has only five minutes.

SHRI N. THALAVAI SUNDRAM (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, thank you very much for giving me an opportunity to speak on this issue. It is not a political issue. It is an issue which relates to the Dalits. The Dalits are suffering at the hands of either police or some other people everyday. Sir, we know it very well that there is a police manual which is applicable in the whole country. I want to know from the hon. Home Minister whether the concerned police officials got any instructions from the State Government.

Sir, our party colleagues, Shei S. Niraikulathan, Shri O.S. Manian and Shri R. Margabandu, put a common question regarding the communal tension in our country on the 5th March, 1997. The question was whether the Government proposes to take any stringent measures for containing the widespread communal violence in several parts of the country. In reply to that the Home Minister said,

"The overall communal situation in the country has considerably improved since 1993. There was a major incident of violence only in Tamil Nadu during the last two months." Sir, nowadays, as far as communal violence is concerned, Tamil Nadu is the worst affected. The law and order situation in Tamil Nadu is worse than what is there in Maharashtra. How are things going on in this country? It is not only Maharashtra but also Tamil Nadu where the situation is not good.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Mr. Sundaram, the debate is on Maharashtra.

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM: Sir, I am just comparing the condition of Tamil Nadu with other States.

SHRI AJIT P.K. JOGI (Madhya Pradesh): He started from Tamil Nadu and now has reached Mumbai.

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM: Mr. Vice-Chairman, Sir, you know it very well that different political parties are ruling in defferent States of our country. We have no objection to that. We as Members of Parliament want to know from the Home Minister as to how these incidents are taking place in our country. How many people were affected by such incidents in Maharashtra? I want to know whether this incident was politically motivated or not. I also want to know whether the police officials did consult the State Government and whether there was misuse of power for attaching the Dalits. If these incidents are not stopped, than we are going to witness such incidents in Maharashtra, Tamil Nadu, West Bengal and everywhere. There is communal tension in the whole country. I request the hon. Home Minister to take necessary steps to investigate whether police officials took the law into their own hands or there were any instructions from the State Government of Maharashtra for firing on Dalits.

My next point is this. We are very proud that our hon. President belongs to the Dalits. But, so far as Maharashtra is concerned, the Dalits are being attacked there day in and day out. The State Government should ensure that such incidents do not recur in future. Mr. Vice-Chairman, Sir, you also wanted to know whether this matter had been referred to the Human Rights Commission.

I request the Chair to give a direction to the hon. Home Minister in this regard. This matter should be investigated thoroughly because it is a very serious matter. It is not a political issue.

Sir, as you know we have statues of national leaders in every State. If you go to West Bengal, statues of Netaji are there; if you go to Karnataka or Tamil Nadu or to any other State, statues of Dr. Ambedkar are there. We know very well that Dr. Ambedkar is respected very greatly in this country. Everywhere statues of Dr. Ambedkar are there. I suggest that adequate protection may be given to those statues which are in the State capitals and metropolitan cities. I would like to know whether you are going to provide protection to the statues of all national leaders. I think we can request the Municipal Corporations in various cities to take care of these statues. Sir. the Home Minister may also like to give a direction to the concerned district police officials for providing police protection to these statues. Sir, the second point that I would like to mention is that the State Government has announced a compensation of Rs. 2.5 lakhs for those Dalits who suffered because of this firing in Maharashtra. Sir, I think that this compensation is not enough for these people. Sir, I again want to know as to who was in the background of this incident. I request the Home Minister, through the Chair, that this matter should be investigated by the National Human Rights Commission as was suggested by the Vice-Chairman earlier. Lastly, Sir, I quoted the question which was put to the Home Minister

only because in his reply the Home Minister had stated that the law and order in Tamil Nadu was worse. Thank you

श्री नरेश यादव (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय। श्री शिंदे साहब एवं अन्य साथियों के द्वारा जो दलितों पर मुंबई में अत्याचार हुआ उसके विरोध में इस सदन में चर्चा के लिए विषय लाया गया है यह बहुत महत्वपूर्ण है और इस विषय पर पिछले दो दिन बहस हुआ। काफी अच्छे विचार सारे साथियों ने लाए हैं और मैं भी चंद शब्दों में अपनी बात रखूंगा।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने देखा कि जो महाराष्ट्र सरकार से संबंधी है भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना और फिर उधर से इधर हम सत्ता पक्ष के लोग जब यह चर्चा हो रही है तब सत्ता पक्ष के लोग जो महाराष्ट्र में काबिज है उनकी यह भावना रहती है कि किसी न किसी तरह बात को रोका जाए और जब आंख उठाते हैं तो तब हम लोगों की भावना रहती है कि हम आपकी बात को किसी न किसी तरह रोकें। इस टोका-टोकी, रोका-रोकी में मेरी समझ से किसी भी समस्या का समाधान होने वाला नहीं है। मैं इस बात को भी अच्छी तरह से जानता हूं कि जो चर्चा हो रही है, माननीय गृह मंत्री जी जवाब देंगे और कल पे यह लायब्रेरी की एसेट हो जाएगी। कोई इस पर कुछ होने वाला नहीं है इसलिए कि मुंबई की घटना के पहले डा॰ संपूर्णानंद की मूर्ति का अनावरण करने के लिए एक दलित महापुरुष बाबू जगजीवन राम जी गए थे। 1977 में और अनावरण के बाद यह मूर्ति अछूत हो गई तथा गंगाजल से उस मूर्ति को धोया गया। आज भी उपसभाध्यक्ष महोदय, जब दलितों की बरात निकलती है तो उस बारात को शान-व-शौकत से अगर निकाला जाता है तो उस पर तथाकथित जातियों का हमला होता है। इसलिए महोदय, हमें और इस सदन को गंभीरता से इस बात को लेना पड़ेगा। आखिर क्या कारण है, क्यों दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं, क्यों गोलियां चलाई जा रही हैं?

यह किसी दल का सवाल नहीं है। न हमारे दल का सवाल है, न आपके दल का सवाल है। सांप्रदायिकता या जातीयता, नफरत यह लोगों के दिमाग में पायी जाती है और जब तक इस बीमारी को दिमाग से नहीं निकाला जाएगा तब तक इस समस्या का समाधान नहीं होगा।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हम इस बात को कहना चाहते हैं कि हमारे हिन्दुस्तान में जाति के आधार पर मान और सम्मान मिलता है, जाति के आधार पर भूमि पर काबिज होते हैं, जाति के आधार पर शिक्षा दी जाती है। जाति के आधार पर लोग अशिक्षित रहते हैं, जाति के आधार पर सारी व्यवस्था टिकी हुई है। आज हमारा दलित बहुमंजिले मकान बनाता है, लेकिन यह खुद रहता तो झुग्गी, झोपड़ी या सड़क के किनारे है। इसलिए हमें इस बात पर गंभीरता से सोचना पड़ेगा और सोचकर कोई न कोई ठोस निर्णय लेना पड़ेगा कि आगे आने वाले दिनों में आजादी के इस 50 साल बाद, तो दलितों पर अत्याचार न हो। इस बात को हमें और आपको गंभीरता से सोचना है।

महोदय, माननीय गृहमंत्री जी से मैं पूछना चाहता हूं, चूंकि वह समाजवादी विचार के हैं, सारी चीजों से ऊपर उठकर के सिद्धांत की राजनीति करते हैं, आपसे इस देश को काफी भरोसा है, क्या आपके रहते हुए भी इस देश में इस तरह 11 निरपराध दलित मारे जाएंगे? वहां मजिस्ट्रेट ने आर्डर नहीं दिया, बिना मजिस्ट्रेट के आर्डर के एक पुलिस इंस्पेक्टर के आदेश से गोली चलती है और इस गोली चलने में इस तरह यह 11 दलित मारे गए। गोली चलने से जो घायल हुए हैं वह कौन थे? घायल मजदूर था, राजमिस्त्री का काम करने वाला, ठेला खींचने वाला था और उसकी कोई गलती नहीं थी। उस मजदूर ने क्या अपराध किया था? कुछ नहीं, सिर्फ यह कि वह काम करने के लिए जा रहा था।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हम यह कहना चाहते हैं, हम इस बात को मानते हैं, कि आज पूरे देश में एक व्यापक अभियान चलाने की जरूरत है, जिसके चलते इस समस्या का सही निदान हो सके। हम उस पक्ष के साथियों से कहना चाहते हैं कि आप राम का नाम बहुत लेते हैं, राम के साहरे गद्दी पर आते हैं, कम से कम आपको रामकथा से भी सबक सीखना चाहिए कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने एक दलित महिला के हाथ से झूठा बेर खाया था, सबरी के हाथ से झूठा बेर खाया था। आप बहुत दुहाई देते हैं, राम का नाम लेते हैं, राम के नाम पर गद्दी पर आने का तौर तरीका आपने सीखा है। राम हम सभी के लिए, समस्त हिन्दुस्तान-वासियों के लिए ही नहीं दुनिया के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम है। आप जिस तरह राम का नाम भुना भुना कर आते हैं, क्या वह आदर्श है? जो आदर्श राम ने उपस्थापित किया, जिस आदर्श को रखा, एक दलित महिला के हाथ से झूठा बेर खाया, उसी दलित पर महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना की सरकार गोलियां चलवा रही है और जिसके चलते वहां 11 दलित लोगों की हत्या हुई। यह राष्ट्र के लिए शर्म की बात है। जो पार्टी वहां सत्ता में आसीन है, उससे मैं

कहना चाहता हूं कि जिस तरह राष्ट्रीय जनता दल के लोग सदन में, जिस दिन सत्र प्रारंभ हुआ तो उसी दिन बाबा साहेब भीमराव अंम्बेडकर की मूर्ति के समक्ष गए और वहां जाकर कहा कि हम शर्मिन्दा हैं और शर्मिन्दा इसलिए हैं कि कुछ लोगों ने दलितों पर अत्याचार किया है, उसी तरह कम से कम भाजपा और शिवसेना के लोगों को जाकर भी शर्मिन्दा होना चाहिए बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति के सामने। क्या बिगाड़ा था बाबा साहेब भीमराव अम्बडकर ने? जिस किसी ने भी किया, यह जांच का विषय है। मूर्ति का इस तरह अपमान करना उचित नहीं। जरा आप अपने दिल पर हाथ रखिए और सोचिए कि आज बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति का अपमान हुआ है, हमें तो बहुत सम्मान है छत्रपति शिवाजी पर, अगर महाराष्ट्र में आज कोई व्यक्ति छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा के गले में माला जूते की पहना दे तो क्या होगा महाराष्ट्र में? बलवा नहीं हो जाएगा? हम लोगों का छत्रपति शिवाजी पर उतना ही सम्मान है, स्वाभिमान है, गर्व है और इसलिए कि छत्रपति शिवाजी देश के महान व्यक्ति थे, उन्होंने इस देश के सम्मान को बचाया। किस व्यक्ति को छत्रपति शिवाजी पर अभिमान नहीं होगा। लेकिन जरा सोचिए कि बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर भी किसी जाति के लिए, किसी धर्म के लिए आस्था का प्रतीक हैं और राष्ट्र के नायक बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर, जो कि संविधान सभा के चेयरमैन थे, इतने महान व्यक्ति की मूर्ति का अपमान किया गया और जब उसके बारे में जवाब मांगा गया और कहा गया कि दोषियों के विरुद्ध कार्रवाही करो तो कार्रवाई के बदले गोली चलाई गई और उससे दलित मारे गए। इतना ही नहीं, महाराष्ट्र में विपक्ष के नेता भुजबल साहब ने अगर विरोध किया तो उनके घर पर हमला हुआ। हमारे एक और कांग्रेस के मित्र ने विरोध किया तो उनके घर पर हमला हुआ। तो यह हमले की संस्कृति क्या है? कभी पत्रकार पर हमला, कभी इस पर हमला, कभी उस पर हमला? ये हमला करके किसको क्या दिखाना चाहते हैं?

उपसभाध्यक्ष महोदय, हम आपसे आग्रह करना चाहते है कि इस देश में हजारों-हजारों साल से चली आ रही जाति की व्यवस्था पर हमें प्रहार करना पड़ेगा, चोट करनी पड़ेगी क्योंकि जाति-व्यवस्था पर ही ये सारी चीजें आधारित हैं। आप जानते हैं कि इस देश के न्यायालय में भी जाति के आधार पर बेल ग्रांट होती है, बेल रिजेक्ट होती है। यह जाति की व्यवस्था देश की नस-नस में समाई हुई है। अगर दलित का कल्याण हम करना चाहते हैं, सही मायनों में हम इस बात को चाहते है कि आने वाले समय में देश में किसी भी दलित पर अत्याचार न हो तो हमें इस जाति-व्यवस्था को तोड़ना होगा। महोदय, इस देश में एक चौथाई हिस्सा दलितों का है और उसपर अगर हमला होता है तो देश के सामने और दुनिया के सामने हम क्या संदेश देंगे? आजादी के 50 साल बाद भी एक भाई अपने भाई पर ही गोली चला रहा है इसलिए कि वह भाई हजारों-हजारों साल से पिछड़ा हुआ है, कुचला है, दबा है और सम्मान व सम्पत्ति से वंचित है।

इसलिए, उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आग्रह करना चाहता हूं कि जिस किसी ने, जिस किसी दल की सरकार के होते यह कार्रवाई हुई है, उसकी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वह अपनी गद्दी को छोड़ दे। अगर जरा भी चरित्र बचा हुआ है, नैतिकता बची हुई है तो बाबा साहब भीमराव जी की मूर्ति के अपमान और दलितों की हत्या होने पर आपको अपनी गद्दी को त्याग देना चाहिए। अपर आप यह त्याग नहीं करते हैं तो केन्द्र सरकार का फर्ज बनता है कि वह महाराष्ट्र की सरकार को बर्खास्त कर दे।

इन्हीं शब्दों के साथ, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिए आपका धन्यवाद करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN. F. FERNANDES): Now, I would request Mr. Ish Dutt Yadav to conclude in time. Your party has only five minutes. I have the list before me.

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी है और जब मुम्बई में कोई घटना होती है तो उसका देश की आर्थिक स्थिति पर, राजनीतिक स्थिति पर, सामाजिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। कुछ वर्षों पहले जब वहां बम विस्फोट हुए तो उसका प्रभाव पूरे देश के ऊपर पड़ा था। इस समय एक ही कांटीन्यूएशन में, एक ही निरंतरता में मुम्बई में तीन घटनाएं हुईं। बाबा साहब डा० भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति का अपमान हुआ, फिर इसका विरोध हुआ, पुलिस ने फायरिंग की और 11 लोग जान से मारे गए और इसके बाद कांग्रेस के बड़े नेता और विपक्ष के नेता श्री छगन भुजबल के घर पर कातिलाना हमला हुआ। ये तीनों घटनाएं एक -दूसरे से

संबंधित हैं और ये तीनों घटनाएं भयंकर हैं। इस सदन में इस संबंध में बहुत से माननीय सदस्यों ने अपने विचार प्रकट किए। गृह मंत्री जी स्वयं मौके पर वहां गए और इन्होंने घटनास्थल का भी निरीक्षण किया। मैंने समाचारपत्रों में पढ़ा था कि छगन भुजबल के घर पर भी गए थे और पूरी स्थिति का इन्होंने जायजा लिया था। लोक सभा में गृह मंत्री जी का बयान हो चुका है। सारी परिस्थिति को देखने से और गृह मंत्री के बयान पर विचार करने से अब यह स्पष्ट हो गया है कि महाराष्ट्र की सरकार इन साजिशों के पीछे है। हमारे साथी भाई नरेश यादव सही कह रहे थे कि सदियों से समाज में जो लोग पिछड़े हुए हैं, कुचले हुए हैं, दलित हैं, अपमानित किए गए हैं, जो अब अपने अधिकारों की मांग कर रहे हैं, जो समाज में अब बराबरी में आना चाहते हैं, उन्हें ये सांप्रदायिक ताकतें आगे नहीं बढ़ने देना चाहती हैं जिनकी आज महाराष्ट्र में सरकार है।

महोदय, यह विडंबना है कि प्रजातंत्र का इस तरह का स्वरूप आज देखने में आ रहा है कि जो लोग सरकार में हैं, उनके अलावा एक सुपर सरकार होती है। हम नाम नहीं लेना चाहते हैं लेकिन एक बड़े नेता हैं हमारे प्रधान जी की पार्टी के, वे सारा संचालन कर रहे हैं।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (उत्तर प्रदेश): प्रधान जी को अपनी पार्टी का पता नहीं है, जैसे आपके प्रधानमंत्री को पता नहीं है कि पार्टी कौन सी है उनकी।

श्री ईश दत्त यादव: इसी तरह हमारे उत्तर प्रदेश में है। वहां भी सांप्रदायिक ताकतों की सरकार बन गई और उसको भी एक सुपर चीफ मिनिस्टर ऊपर से चला रहे हैं और ये लोग जो सरकार के बाहर के लोग हैं, ये प्रदेशों में अशांति और अव्यवस्था फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं।

श्री सतीश प्रधान: ये बिहार में भी वही हो रहा है।

श्री ईश दत्त यादव: महोदय, अगर बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति का अपमान हुआ है तो पूरे देश का अपमान हुआ है और संविधान का अपमान हुआ है। महाराष्ट्र सरकार को, वहां के मुख्यमंत्री को, वहां के गृह मंत्री को चाहिए था कि इस घटना को वे गंभीरता से लेते और इसकी जांच कराते। जनता का विरोध करना और उग्र होना स्वभाविक है। अगर देश के एक बड़े नेता का अपमान किया जाए और जूतों और चप्पलों की माला उनकी मूर्ति को पहनाई जाए, कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति इसको बरदाश्त करने के लिए तैयार नहीं है। हम तो यह कहते हैं कि वहां जिन लोगों की सरकार है, उन्हीं की साजिश इसके पीछे रही है जूते और चप्पलों की माला पहनाने में। अंग्रेजों की तरह से इनकी नीति है कि फूट डालो और शासन करो। महोदय, ये हिंदू राज्य की कल्पना करते हैं, ये इस देश के एक वर्ग को काटकर राज करना चाहते हैं, ये चाहते हैं कि इस देश में केवल कुछ ही लोगों का राज रहे, जो सांप्रदायिक ताकतें हैं, केवल उन्ही का राज रहे। यह कोई साधारण घटना नहीं है, यह असाधारण घटना है जिसका पूरे देश के ऊपर प्रभाव पड़ेगा ...(व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Mr. Pradhan, you should not take his time. Please sit down. Let him complete. He has only five minutes.

श्री ईश दत्त यादव: माननीय गृह मंत्री जी, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि अगर आप देश की इस बिगड़ती हुई परिस्थिति की ओर ध्यान नहीं देंगे तो स्थिति भयावह हो सकती है।

श्री संजय निरुपम: महोदय, गृह मंत्री जी सो रहे हैं।

श्री महेश्वर सिंह (हिमाचल प्रदेश): ईश दत्त जी, आप शरमाते क्यों हो, बोल दीजिए।

श्री ईश दत्त यादव: आप चिंतित न होइए। गृह मंत्री जी मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं।

मान्यवर, मैं निवेदन कर रहा था कि अगर इस तरह की घटनाएं इस देश में होती रही तो देश की स्थिति भयावह हो सकती है। हिन्दू-मुसलमान के नाम पर, जांत-पांत के नाम पर, धर्म के नाम पर, मजहब के नाम पर, बिरादरी के नाम पर अगर इस तरह से सरकारें काम करती रहेंगी तो स्थिति भयावह हो जाएगी। इसलिए मान्यवर, मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री जी से अनुरोध करना चाहूंगा कि आपने स्वयं देख लिया है और मैं समझता हूं कि गृह मंत्री जी पूर्णतया संतुष्ट होंगे कि महाराष्ट्र में, मुम्बई में जो कुछ हुआ, जो घटनाएं हुई जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं इनके पीछे साम्प्रदायिक ताकतों का हाथ था जिनकी वहां पर सरकार है और ऐसी सरकार एक मिनट भी अब महाराष्ट्र में रहने लायक नहीं है और इसलिए अनुच्छेद-356 की व्यवस्था की गई है संविधान के अंदर। मैं चाहूंगा मान्यवर, आपके माध्यम से गृह मंत्री जी से कि आप धारा 356 का प्रयोग करिए। यह साम्प्रदायिक ताकतें केवल महाराष्ट्र को नहीं

पूरे देश के लिए खतरनाक होती चली जा रही है। अगर इन पर रोक नहीं लगाई जाती है, अंकुश नहीं लगाया जाता है तो देश के लिए खतरनाक स्थिति होगी। मेरा दूसरा निवेदन होगा कि जो घटनाएं हुईं चाहे बाबा साहब की मूर्ति का अपमान करने का, फायरंग का और छगन भुजबल के घर पर आक्रमण करने का, तीनों घटनाएं एक दूसरे से संबंधित हैं। लेकिन तीनों की निष्पक्ष उच्चस्तरीय जांच कराई जानी चाहिए और जांच कराकर दोषी लोगों को कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए ताकि इसकी पुनरावृत्ति न हो। मान्यवर, मैं आपका इशारा समझ रहा हूं, मैं और समय नहीं लेना चाहता। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको बहुत धन्यवाद दे रहा हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Thank you. Now Dr. Gopalrao Vithalrao Patil.

Dr. Patil, your party has exhausted its time and exceeded by four minutes. I will give you only five minutes.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL (Maharashtra): No, no. Only one Member has spoken from our Party.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Your party has taken all the time. I will give you just five minutes.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: This side's views should also come before the House. That is the thing.

Thank you, hon. Vice-Chairman, for giving me this opportunity.

On the 11th of July, there was the desecration of the statue of Babasaheb Ambedkar, and there was the protest and violence, resulting the death of ten people. This incident was very tragic and painful. Therefore, the leaders of BJP met His Excellency, the Governor of Maharashtra. When the Home Minister of India, Shri Indrajit Gupta, was there in Bombay on the 15th, we expressed our concern and anguish. We deplored all the three incidents of desecration, firing and attack on the opposition leaders. This is my first submission.

The second point is that just now we have heard wild and baseless allegations against the Maharashtra Government. Why I am calling them as baseless is because there was no truth. No statistics were given, and no information was supplied, but only wild allegations were made.

First, one hon. Member said that Maharashtra was only for Maharashtrians and that there was no place there for non-Maharashtrians. This is one of the wildest allegations because everybody in India knows that Maharashtra is the only cosmopolitan State in the whole of India, where the maximum number of non-Maharashtrians from Jammu and Kashmir to Kanyakumari live. There are people from North India, Bihar and West Bengal. Then, there are many people from South India, Gujarat and Punjab. The thing has come to such a stage that we can say that Bombay is mini-India. The population break-up in Bombay is such that Maharashtrians are in a minority and other people are in a majority. Even in other cities of Maharashtra the picture is just the same. Then how can you say there is no place for non-Maharashtrians there? This is a blind-folded charge and I refute it strongly.

Another point made out is that there is no law and order in Maharashtra, the Government there is autocratic, nondemocratic and so on and so forth, but the facts are not given. They say there are political murders, but not a single example has been given as to which leader was murdered. I can state several cases—they are known and discussions on them had taken place in this House also—that during the Congress regime—where imporant leaders were murdered. Our M.L.A., hon. Prem Kumar Sharma, was murdered in his house. Our venerable leader, Ram Das Naik, who was President of the Bombay Unit of the B.J.P. was murdered. The other two, Ramesh More, M.L.A. and Vithal Chavan were

murdered. They were political activists in Bombay. These people were murdered and the culprits were not arrested. Only when the Government led by Shiv Sena and B.J.P. alliance, came into power, they arrested all the culprits, chargesheeted them and they will be prosecuted now. They are now making a noise that their leader, the Leader of the Opposition there, has been attacked. The only work of the Congress rule there was to beat the Members of the Opposition. I can say there might not be a single Minister, who had not sustained lathis of the Congress police. I can say that on the then leader of the Opposition and the present Home Minister and Deputy Chief Minister, hon. Gopinath Munde, a murderous attack was made and bullets were fired on him.

SHRI GOVINDRAO ADIK. It was not done by any Congressman.

श्री जनार्दन यादव (बिहार): पर यह कांग्रेस के राज में तो हो रहा है। ...(व्यवधान)...

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: It was done during your *Raj. (Interruptions)* During your Congress Raj the topmost leader of the B.J.P., Dr. Murli Manohar Joshi, was attacked and he was bleeding from his head during the Boat Club demonstration. *(Interruptions)* Your Congress Police of Delhi had attacked him. Your *Raj* was just run under MISA. Have you forgotten the MISA? Have you forgotten the black laws which you had enacted? You have said the press was gagged. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): Dr. Patil, you have to restrict yourself to Mumbai. If you beat about the bush, there will be problems.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: Sir, they had not restricted themselves to Mumbai. They were citing some isolated instances of attacks on journalists, but they had gagged the Press by brining in back laws that the whole national has not yet forgotten. How can your totalitarian rule run under MISA be justified? Was it democracy? You are now saying that in Maharashtra there is no democracy. On the contrary, it is the most peaceful State. The Home Minister visited the State four months back and he had said that Maharashtra is one of the best governed States in the whole of India. These are the words of the Home Minister. As against that what had he to say about other States? I don't want to name them, but on U.P. there was a discussion in the House. What type of *Raj* was going on in the Northern States of Bihar and U.P.? Compare with that and see that the situation is in Maharashtra? What has actually happened is that for the first time after indepedence, those who were in the Opposition in Maharashtra, for the first time, are now in Government and those who were in Government, are now in Opposition. The Congress is now out of power. They cannot stay out of power. The issues—social, political and economic—created by the Congress and their fellow-travellers, are now being raked up, because they have now lost the political base. There is no issue and, therfore, they want to create chaos. Why I am saying this is there are some reasons. The incident occurred instantly, within 1½ hours. There was a desecration of the statue at 6.30 and there was a firing at 7.30 or 8. Everything was over within 1½ hours. But is it a sudden incident? No. There were certain things which had taken place. On 10th July there was a debate going on in the Maharashtra Assembly. One Member of the State Legislature belonging to the Congress party while participating in the debate said that there was peace in Maharashtra. It is on record. But this peace was the peace before a storm. In Marathi... *(Time-bell rings)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNANDES): You have already taken 7 minutes.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: Then, I will not speak.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JOHN F. FERNADES): Conclude within two minutes.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: I have to mention about the background; and also what steps the Government has taken. I think I am the second speaker from my party.

Sir, with your permission I would like to state that in the proceedings of the Maharashtra State Assembly what the Member has said is on record.

"The peace before the storm." Then, the Home Minister intervened and said, "Are you having any information as to what is going to happen next?"

The same Member again said:

"Which is the peace of the graveyard? Peace before the storm." I do not know whether he had any previous knowledge that something was going to happen the next day. This debate took place in the Maharashtra State Assembly on the 10th July. So, this is one thing.

The second thing is after the incident many people visited that place. The hon. Leader of the Opposition in the Maharashtra State Assembly also visited that site. Then, many other leaders also visited that site. There was a prominent RPI leader, Mr. Atwale. When he visited that place along with other friends/like Mr. Gavai the RPI Leader Mr. Atwale was beaten by the mob. Mr. Gavai was abused. Even then nobody from the Congress condemned this attack. What is the reason for this?

[The Vice-Chairman (Shri Triloki Nath Chaturvedi) *in the Chair]*

No complaint or FIR was lodged whereas Mr. Bhujbal was accepted there. No leader was allowed to visit that site. This was the condition. I do not know whether the Leader of the Opposition was the friendliest man. Yesterday only I heard that he had purified the martyr's memorial with *gomootra* because it was desecrated by the Dalits earlier. He was the person who said, "Instead of erecting the statue of Gandhiji, why don't you erect the statue of Nathuram Godse?" These were the words of Mr. Bhujbal. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): The hon. Home Minister is scheduled to give his reply at 1.30 P.M. Please conclude. Mr. Adik, don't interrupt him. The hon. Home Minister has to reply.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: I will be brief. Instead of going to other points, I will stick to my own points. It is a well-known fact as to how Mr. Bhujbal has caused defections. Mr. Bhujbal entered the Congress party. There were 52 Members of the Shiv Sena in the Maharashtra Assembly.

SHRI GOVINDRAO ADIK: Sir, I am on a point of order. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Mr. Patil, you should confine yourself to the subject. ...*(Interruptions)*...

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: There were many defecions. Everybody knows about it. I am mentioning only facts. It is far from true. I will give some figures about Maharashtra. They have said 'atrocities', but not a single atrocity has been mentioned in this House.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Dr. Patil, now you have to conclude.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: In 1992, there were various actrocities committed on the Dalits. They were in the form of murder, riots, rapes, molestations and abuse in the name of caste. I will give the figures in respect of these offences from 1992 till 1997.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): You

have to conclude now. If you go into the figures, it will take a lot of time.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: Unless we know the facts and figures, how can we come to a conclusion, Sir?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): You can pass them on to Mr. Adik.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: Mr. Adik's knowing it is not important. All the people should know it. I will give the figures at least for two or three years.

As far as rape cases are concerned, they were 28 in 1992 and then 27 and 37; now they are only 11. It means they are less. In respect of molestations, molestation cases were 78 in 1992, 95 in 1993 and 81 in 1994; they are only 22 now. The cases of abuse, that is, atrocities, were 523, 737 and 438 earlier; now they are only 201. *(Interruptions)*

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): देखिए। वाद-विवाद में बुहत समय जा रहा है, आप अपनी बात समाप्त कर लीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री गोविन्दराव आदिकः इससे बेहतर होगा कि 30 जनवरी, 48 को किसने क्या किया, क्या क्या हुआ, यह बताइए।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी): वे बहुत अनुभवी हैं, अपने ढंग से कह रहे हैं।

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: I will explain only two or three points.

Allegations are made that the police manual was not followed and the magistrate was not called to give the order of firing. The incidents took place in such a way; there was a riot; there was a *rasta roko;* a bus was burnt; and the burning bus was being pushed towards the tankers. At that time, the SRP entered there. The force was less. It was very panicky that if the tankers with LPG, petrol and diesel exploded, that would cause a catastrophic situation resulting in the death of thousands. For orders of firing, there was no time to call the magistrate. Every minute, the situation was worsening. That is why, I feel, the police might not have called the magistrate. To follow the police code and manual also, it takes time. When you are having a *morcha,* fast, demonstration or *rasta roko,* if the police is informed, it comes prepared with all these things, tear gas, lathis, water cannons and so on. Otherwise, they cannot.

Now, the Government has taken some action in this regard. They have instituted a judicial inquiry in consultation with the Home Minister as well as Ram Vilas Paswanji. On the terms of reference, there were consultations. The Government of Maharashtra has given an *ex gratia* payment of Rs. 2 lakhs to the kith and kin of the deceased. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): No. Adikji, no interruption, please. *(Interruptions)* Nirupamji, you will have your chance. Please sit down.

मीणा जी आप अपना समय भी ले रहे हैं (व्यवधान) पाटिल जी, आप इस तरफ देखिये।

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: It is futile to say that the Government of Maharashtra has killed the Dalits. Ninety-nine per cent of the inhabitants of the Ramabai Ambedkar colony are Dalits. Therefore, those people, who had come there in protest, were fired at, and unfortunately, they were Dalits. It is not a question that Dalits were murdered. An incident had taken place. A protest was there. Ninety-nine per cent of the people there were Dalits. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): The question relates to police firing. *(Interruptions)*

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: The State Government of Maharashtra has given Rs. 25,000/- to the

injured. It has suspended three constables who were guarding the statue of Ambedkar Ji. It has arrested forty-five people who were responsible for the attack on Opposition leaders' houses, and who had vandalised the houses, including one M.L.A., two Corporators, one Chairman of an institution and many other hoodlums, who had participated in the incident. They have not at all forgiven them. They have been arrested. Some such steps were taken. Now, about the Dalit movement...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Now, we cannot discuss more about any movement as such. There is no time. Mr. Patil, please conclude.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: Sir, these people are saying that we are against Dalits. But everybody in this country knows that the empowerment of Dalits has come only from Maharashtra. It was Mahatma Phule Sahu Ji Maharaj *(Interruptions)*

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal): Sir, what is this? He is still continuing.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): I am taking care of that aspect. But if you interrupt, what can I do?

SHRI NILOTPAL BASU: I am not interrupting.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: Ambedkar Ji had given the slogan: "Educate, organise and agitate." This was the slogan. What has the Congress party done?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): We are not on that. Please conclude. We can have a separate discussion on that issue.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: I am concluding. While participating in a discussion in the Constituent Assembly, Ambedkar Ji, has stated. "On 26th January 1950, we are going to enter a life of contradictions. In politics, we will have equality and in social and economic life, we will have inequality." Sir, in the 50th golden year of our independence and even after 50 years of our independence, these contradictions still stare at our face. What are you going to do? This is not an isolated incident. Many such incidents have taken place and many such incidents will take place.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Thank you, Mr. Patil.

DR. GOPALRAO VITHALRAO PATIL: We should not be emotional.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): I thought you have finished. Shri Sanjay Nirupam.

श्री संजय निरूपम: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं विषय में जाने से पहले चार पंक्तियां बोलना चाहता हूं **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): समय का ध्यान रखिये।

श्री संजय निरूपम: मैं यह चार पंक्तियां अपने कांग्रेस के साथियों के लिए बोलना चाहता हूं जिन लोगों ने आग लगाने का काम शुरू किया, उनके लिए बोलना चाहता हूं। उसके बाद मैं विषय पर आऊंगा **(व्यवधान)** आदिक साहब अब मुझे बोलने दीजिये, आप बहुत बोल चुके हैं **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आपकी व्यक्तिगत मित्रता का मुझे ज्ञान है लेकिन यहां पर हाऊस में बोलने दीजिये **(व्यवधान)**

श्री गोविन्दराव आदिक: मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): किस रूल के अंडर है? **(व्यवधान)**

श्री गोविन्दराव आदिक: उन्होंने शुरूआत की कांग्रेस के लोगों से **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): कांग्रेस तो 1885 में पैदा हुई थी तो आप उसका जिक्र मत कीजिए। आप बोलिए...**(व्यवधान)** Please

take your seat. The hon. Home Minister is needlessly delayed. He came twice or thrice yesterday. Let us conclude certain things.

श्री संजय निरूपम: महोदया, 11 जुलाई को जो दुखद घटना घटी जिसमें 11 दलित भाइयों की जान गयी, उस घटना पर हम शर्मिन्दा हैं। हमने निन्दा जाहिर की है हमने कन्डेम्न किया है इसको। लेकिन उस घटना को जिस तरह से पोलिटिक्लाइज किया जा रहा है — उस गंभीर और बेहद संवेदनशील घटना को उससे हमें बहुत दुख होता है। दो तीन दिन पहले हनुमनतप्पा जी बोल रहे थे यहां पर, उन्होंने कहा कि "सामना" में इस घटना पर खुशी जाहिर की गयी थी और कहा गया था कि हमने दलितों को सबक सिखाया है। हमने ऐसा कभी नहीं कहा। मैं यहां "सामना" का एडीटोरियल लेकर आया हूं। मैंने फैक्स से वहां बम्बई से मंगवाया है। सर, यह 12 जुलाई का एडीटोरियल है, अग्रलेख है। 11 जुलाई को घटना घटी और मैंने यह एडीटोरियल लिखा है। उस एडीटोरियल की चार पंक्तियां मैं सुनाना चाहता हूं। सर, इसका शीर्षक है "अम्बेडकर के सम्मान में हम जीना चाहते हैं, अम्बेडकर को सम्मानित रखना चाहते हैं, उनके गौरव की रक्षा करना चाहते हैं"। हमारी पहली पंक्ति है कि घाटकोपर पूर्व के रमाबाई अम्बेडकर कालोनी में कल जो कुछ हुआ उस पर हम नहीं पूरा देश शर्मिन्दा है। यह हमारी पहली लाइन है। आगे मैंने लिखा है, पहली बात तो यह है कि अम्बेडकर इतने महान है कि कहीं किसी ने चप्पल की माला पहना दी तो इससे उनकी महानता कम नहीं होती बल्कि जिस शरारती व्यक्ति ने यह हरकत की इससे उसके टुच्चेपन का अहसास होता है। छोटा वह होता है अम्बेडकर नहीं। हमारे जो दलित भाई इस घटना से आहत होकर सड़क पर उतर आए उन्हें सोचना चाहिए था कि दरअसल शरारती तत्वों की मंशा यही थी। सर, यह मैंने कोड किया है अग्रलेख को जो संयोगवश मैंने ही लिखा है। सर, मैं आगे बताना चाहता हूं कि जब फायरिंग हुई — फायरिंग सात बजे के आस पास हुई तो उसके तत्काल बाद हमारे मुख्य मंत्री और उप मुख्य मंत्री उस घटना स्थल पर पहुंचे। 12 जुलाई को बंद का आह्वान किया गया था। 11 जुलाई की रात को आया कि कल बंद रहेगा बम्बई। हमारे शिव प्रमुख ने बयान दिया कि इस बंद का हम विरोध नहीं करेंगे। आम तौर पर क्या होता है सर कि किसी भी आपोजीशन पार्टी की तरफ से कोई बंद की अपील की जाती है तो जो सत्तारूढ़ दल होता है वह उस बंद को असफल करने की कोशिश करता है। लेकिन हमारे शिव सेना प्रमुख ने कहा कि यह घटना वाकई बहुत दुखद है, त्रासद है, ट्रेजिक है इसलिए हम इस बंद का विरोध नहीं करेंगे और हम, जो बंद करने वाले लोग हैं उन्हें असफल करने के लिए उन्हें डिस्टर्ब करने की कोशिश नहीं करेंगे। सर, 12 जुलाई की शाम को बंद करने के दौरान जबर्दस्त उत्पात मचाया गया। बान्द्रा में खैरवाड़ी में हमारी शाखा है, शिव सेना की, उस शाखा में बंद वाले, रिपब्लिकन पार्टी वाले और कांग्रेस वाले गए और हमारी शाखा को पूरा तोड़ डाला। वहां शिवाजी महाराज की प्रतिमा थी, उस प्रतिमा को उठाकर जमीन पर फेंक दिया गया। शिव सैनिकों की मां तुल्य और शिव सेना के प्रमुख की स्वर्गीय पत्नी श्रीमती मीना ताई ठाकरे जिनकी तस्वीर रहती है हर शाखा में हमारे यहां, उस तस्वीर को उठाकर जमीन पर फैंक दिया गया। सर, मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या शिव सैनिकों की भावनाएं इससे आहत नहीं हुई होंगी, क्या वे इन्सान नहीं हैं? सर, उसी की प्रतिक्रिया में जो विपक्ष के नेता हैं जिनके बारे में बहुत भावुक हो रहे हैं सारे लोग, उन विपक्ष के नेता के घर पर हमला हुआ। उस हमले की मुख्य मंत्री ने निन्दा की और उप मुख्य मंत्री ने भी निन्दा की। उसके बाद तकरीबन 45 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

अब फायरिंग का जहां तक प्रश्न है। हमने कभी फायरिंग की तारीफ नहीं की। कभी हमने प्रशंसा नहीं की। हमारे मुख्य मंत्री जी ने जुडीशियल इंक्वायरी सेट अप की है और कहा गया है कि दो महीने के अंदर आप इसकी रिपोर्ट दें। लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या इस तरह की फायरिंग महाराष्ट्र में या पूरे देश में पहली बार हुई है? क्या इस बात की कोई गारंटी दे सकते हैं कि जब पूरे देश में इतने अपराधकर्म बढ़ रहे हैं और राजनीतिक विद्वेष, राइवलरी बढ़ रही है तब क्या आने वाले दिनों में कभी कहीं फायरिंग नहीं होगी और आने वाले दिनों में कभी किसी भी स्टेट में कोई फायरिंग होगी तो उस सरकार को गिरा दिया जाएगा, वहां धारा 356 लागू की जाएगी। मैं यह गारंटी चाहता हूं। मैं यह जवाब चाहता हूं इस सदन से, होम मिनिस्टर से और आपसे भी। अगर ऐसी कोई गारंटी देते हैं कि आने वाले दिनों में हिंदुस्तान में कहीं किसी दलित समाज पर या गैर दलित समाज पर या सवर्ण वर्ग अथवा किसी भी समाज पर कोई फायरिंग नहीं होगी, अगर फायरिंग होती है तो उस सरकार को गिरा दिया जाएगा, तो हमें 356 स्वीकार

है। लेकिन इस बात की गारंटी लिखित तौर पर यहां सदन को दी जानी चाहिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): कोशिश तो हम लोगों की है। समाज को यही करना है।

श्री संजय निरूपम: सर, आगे मैं टैंकर थ्योरी के बारे में बताना चाहता हूं। पुलिस का कहना यह था कि टैंकर में गैस थी। सामने मॉब थी। उस भीड़ की कोशिश यह थी कि उस टैंकर में आग लगा दी जाए। विस्फोट कर दिया जाए। हमारी विपक्षी पार्टियों ने जो मुम्बई में सक्रिय हैं और सदन में भी कह रहे हैं लोग, उनका कहना है कि टैंकर खाली था। मान लिया कि टैंकर खाली थे। अगर वहां तीनों-चारों टैंकर खाली पड़े थे तो क्या जिस वक्त सामने से पांच हजार क्रुद्ध, नाराज़ और गुस्साए लोगों की भीड़ आ रही थी, वे अटैक करना चाह रहे थे, आलरेडी एक बस को जला कर खाक कर चुके थे, क्या उस वक्त वहां पर मौजूद पुलिस इंसपैक्टर के पास इतना वक्त था कि वह जाकर टैंकर को ठोक कर देखे कि यह खाली है या भरा है? क्या वह भीड़ उस इंसपैक्टर के लिए इंतजार करती कि पहले इंसपैक्टर को पता लगाने दो कि टैंकर भरा है या खाली है और उसके बाद हम हमला करेंगे? इसलिए सर, अगर उस इंसपैक्टर ने गोली चलाई और उसका यह तर्क है कि टैंकर भरा हुआ था, उसमें गैस थी तो हमें उस इंसपैक्टर की नीयत पर एकदम से अविश्वास नहीं करना चाहिए। दूसरी बात हमारे प्रो॰ राम कापसे जी ने दो दिन पहले एक यहां पर बयान दिया था अपने भाषण के दौरान कि जो कंसर्ड आयल कंपनीज़ हैं उन लोगों ने आलरेडी एक सर्टिफिकेट दिया हुआ है, एक प्रमाण-पत्र दिया हुआ है कि उन तीनों टैंकर्स में गैस भरी हुई थी। उसके बाद भी यह विवाद का जो विषय है वह हमें समझ में नहीं आ रहा है। सर, इनका जो बेसिक सवाल है वह यह है कि उस इंसपैक्टर को सस्पेंड कर दिया जाए जिसने फायरिंग की है। हम यह कहते हैं कि जिस व्यक्ति ने, जिस इंसपैक्टर ने, भले वह अपनी प्रतिरक्षा में या आस-पास के एरिया को बचाने के प्रयास में उसने गोली चलाई हो, लेकिन जिस इंसपैक्टर ने या किसी भी व्यक्ति ने अगर 11 लोगों की हत्या की है या जान ली है, फायरिंग की है तो उस इंसपैक्टर को सिर्फ सस्पेंड नहीं, सर, उसे डिसमिस किया जाना चाहिए। लेकिन पहले इन्क्वायरी की रिपोर्ट तो आने दीजिए। अभी इन्क्वायरी को रिपोर्ट आने में डेढ़ महीना रह गया है। डेढ़ महीने तक इंतजार कीजिए। इन्क्वायरी की रिपोर्ट में अगर यह बात आती है कि वह फायरिंग अनजस्टीफाइड थी और औचित्य उसका कुछ नहीं था तो उस इंसपैक्टर को डिसमिस किया जाएगा। मैं अपने मुख्य मंत्री जी से जाकर अनुरोध करूंगा सदन की तरफ से कि अगर इस रिपोर्ट में यह इंसपैक्टर की फायरिंग अनजस्टीफाइड पायी जाती है तो उस इंसपैक्टर को तत्काल बर्खास्त करना चाहिए, लेकिन फिलहाल उस इंसपैक्टर की नीयत पर हमें इस तरह से अविश्वास नहीं करना चाहिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): कृपया जल्दी समाप्त करें।

श्री संजय निरूपम: सर, इससे जुड़ा हुआ थोड़ा बुनियादी प्रश्न है। फायरिंग हुई, उसके बाद बंद हुआ और उसके बाद विपक्ष के नेता के घर पर हमला हुआ। ये तीनों घटनाएं 11, 12, 13 जुलाई के बीच में हुई है। तीनों घटनाओं की बुनियाद में सब से बड़ा प्रश्न यह है कि बाबा साहब अंबेडकर का अपमान किसने किया? बाबा साहब अम्बेडकर का अपमान किसने किया पिछले दस सालों से यह प्रक्रिया जारी है। एक भाई बोल रहे थे वहां से कि आज तक शिवाजी महाराज का अपमान नहीं हुआ पिछले दस सालों से महाराष्ट्र में यही हो रहा है। कभी बाबा साहब का अपमान किया जाता है और कभी शिवाजी महाराज का अपमान किया जाता है। लेकिन मैं यहां दावे के साथ आपके सामने यह तथ्य रखना चाहता हूं कि पिछले दस सालों में बाबा साहब अम्बेडकर का जब जब भी अपमान हुआ है आज तक किसी भी घटना में कोई शिव सैनिक या भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता का हाथ नहीं पाया गया है। ढाई साल से हमारी सत्ता है, इससे पहले इनकी सत्ता थी। इन्होंने भी बहुत छानबीन कराई है लेकिन आज तक हमारा कोई कार्यकर्ता इस घृणित कर्म में, इस अपवित्र करने वाले कर्म में नहीं पाया गया, सर। लेकिन घाटकोपर की जो घटना थी उस घटना के लिए मैं सर, आपके सामने एक अखबार की पूरी रिपोर्ट तो नहीं पढ़ पाऊंगा, उसकी हेड लाइन मैं सुनाता हूं। आर॰पी॰आई॰, ए॰पी॰एस॰ रोल इन राइट्स कंफर्म्ड। इनका यह कहना है कि बाबा साहब अम्बेडकर के अपमान करने की घटना में रिपब्लिकन पार्टी आफ् इंडिया और ए॰पी॰एस॰ जो कि कांग्रेस वालों का एक नया संगठन है वहां के एक बहुत बड़े माफिया डॉन् को आगे करके उन लोगों ने एक नई पार्टी बनाई है उस पार्टी और आर॰पी॰आई॰ के लोगों का हाथ था। यह एक कंफर्म्ड न्यूज़ है। ...**(व्यवधान)** सर, एक मिनट मुझे कंप्लीट करने दें। ...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): कंप्लीट, कंप्लीट। ...**(व्यवधान)**

SHRI GOVINDRAO ADIK: He is making allegations against the party.

श्री संजय निरूपम: सर, जो अखबार में छपा है मैं वह आपके सामने कह रहा हूं। अच्छा सर, ...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): देखिए उधर से जब आप भी बोल रहे थे, आपने कहा ...**(व्यवधान)**

श्री गोविन्दराव आदिक: सर, यह एलीगेशन बिल्कुल गलत है। ...**(व्यवधान)**

श्री संजय निरुपम: सर, मैंने कोई एलीगेशन नहीं लगाया। ...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): वह अखबार में पढ़कर बता रहे हैं। ...**(व्यवधान)**

श्री संजय निरुपम: मैंने उस अखबार को रेफर किया है। ...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप समाप्त करिए। अभी और ...**(व्यवधान)** अब आप समाप्त करिए।

श्री संजय निरुपम: सर, मैंने ...**(व्यवधान)** अभी और अन्दर दिया है। ...**(व्यवधान)** सर, उस घटना के तीन पक्ष है। पहला तो 'मिड-डे' कहता है कि उसमें इस तरह की पार्टियां इन्वाल्व थी। बाकायदा पुलिस वालों के पास इसकी इन्फर्मेशन है। लेकिन हम इस पर विश्वास नहीं कर रहे हैं। हमारा मानना है कि जब तक इन्क्वायरी रिपोर्ट नहीं आएगी तब तक हम कोई बात नहीं कहेंगे। मैंने सिर्फ अखबार को रेफर किया। पुलिस वालों के पास एक दूसरी जानकारी यह है कि जो रमाबाई कालोनी है, जहां पर 99 प्रतिशत दलित समाज के लोग रहते हैं, वह एक झोंपड़-पट्टी इलाका है। आपको शायद जानकारी होगी मुंबई में 40 लाख झोंपड़-पट्टी वासियों को मुफ्त में घर देने की एक योजना बनाई गई है। मुम्बई में बहुत सारी झोपड़ पट्टियां है, शायद एशिया में सबसे ज्यादा स्लम ड्वेलर मुम्बई में हैं। उन झोपड़ पट्टियों को डवलप करने के लिए बिल्डर्स को कांट्रेक्ट दिया जा रहा है, सर। उन झोपड़ पट्टियों को कुछ लोग जबरन खाली कराते हैं, कुछ लोग राय-विचार से खाली कराते हैं। जो जबरन खाली कराते हैं, उनकी कोशिश यह होती है कि इन झोपड़-पट्टियों में आग लगा दो या उनको भगा दो। पुलिस के पास ऐसी जानकारी है कि रमाबाई कालोनी को डवलप करने के लिए जिन व्यक्तियों के पास कांट्रेक्ट है, उसमें एक व्यक्ति है विपक्ष के नेता* का पुत्र और दूसरा व्यक्ति है करवे। ऐसी हमें आशंका है, पुलिस को भी आशंका है कि जानबूझकर ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप शीघ्रता करिए। समाप्त करिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम: पुलिस की जो जानकारी है, वह मैं आपके सामने रख रहा हूं। ...**(व्यवधान)**... सर, पुलिस की जो जानकारी है वह आपके सामने मैंने रखी है। मैं अभी विश्वास नहीं कर रहा हूं। ...**(व्यवधान)**...

SHRI GOVINDRAO ADIK: This is a baseless allegation. *(Interruptions)*

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आपका समाप्त हो गया?

श्री संजय निरुपम: सर, एक पाइंट बाकी है। ...**(व्यवधान)**...

श्री गोविन्दराव आदिक: सर, यह एलीगेशन विदड्रा करने के लिए आप बोल दीजिए ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): नहीं, वह स्थिति नहीं है। संजय जी, आप समाप्त करिए। ...**(व्यवधान)**... प्लीज, सिट डाऊन। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम: मुझे इस बात पर संदेह लगता है और जब तक इन्क्वायरी रिपोर्ट नहीं आएगी तब तक मैं विश्वास नहीं करुंगा। ...**(व्यवधान)**...

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिन्दे: यह दलितों के लिए अपमान है। ...**(व्यवधान)**... इस तरह की बात नहीं होनी चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): शिन्दे जी, बहुत सी चीजें नहीं होनी चाहिएं। ...**(व्यवधान)**... आप समाप्त करिए। नाम वगैरह न लेकर आप अपनी बात कहिएं।

श्री संजय निरुपम: सर, तीसरा पक्ष है ...**(व्यवधान)**...

श्री गोविन्दराव आदिक: एलीगेशन विदड्रा होना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

---

*Expunged as ordered by the Chair.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आदिक जी, आप अपनी बात कह चुके। आप मेहरबानी करके बैठिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): दो प्रकार के मापदंड नहीं हो सकते। ...**(व्यवधान)**...

SHRI SUSHILKUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE: The Government has removed 5000 *Jhopad pattis* in the garb of ...*(Interruptions)*...

SHRI GOVINDRAO ADIK: He is making allegations against a person who is not present in the House. Sir, you should ask him to withraw it. *(Interruptions)*

श्री संजय निरुपम: सर, मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): वह कहते हैं कि पुलिस से इस तरह की बात आई है। ...**(व्यवधान)**...

SHRI SUSHILKUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE: The firing was done because the *Jopad patti* was to be vacated. *(Interruptions)*

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आपका समय हो गया है। आप अपनी बात समाप्त करिए।

श्री गोविन्दराव आदिक: सर, मैं आपसे प्रार्थना करुंगा कि इसे एक्सपंज किया जाए। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम: मैं आपसे संरक्षण चाहता हूं, सर। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): I request the Home Minister to give his reply at 1.30 P.M. *(Interruptions)* Please sit down. *(Interruptions)* No interruptions, please. *(Interruptions)*.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप समाप्त करिए, जो भी आपको कहना है।

श्री संजय निरुपम: सर, तीसरा पक्ष यह है। ...**(व्यवधान)**...

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिन्दे: कोई चीज झुग्गी-झोपड़ के बारे में आप बोलें, लेकिन रमाबाई कालोनी पर इस तरह के आरोप का आधार होना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): वह कहते हैं कि पुलिस की जानकारी है। ...**(व्यवधान)**... शिन्दे जी, आप जानते हैं मर्डर और पुलिस फायरिंग में फर्क क्या होता है। ...**(व्यवधान)**... आप बैठिए। प्लीज, आप समाप्त करिए।

श्री शरीफुद्दीन शारिक (जम्मू और कश्मीर): हर बात पर आप कह रहे हैं कि मुझे विश्वास नहीं है। अगर इन्हें विश्वास नहीं है तो रिकार्ड पर यह क्यों आ रहा है? ...**(व्यवधान)**... अगर विश्वास नहीं है तो जरूरत क्या है बोलने की? ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप समाप्त करिए। I will have to call the Home Minister to speak. It is already 1.30 p.m. निरुपम जी, आप एक सेंटेंस में अपनी बात खत्म करिए ...*(interruptions)*... No interruptions will go on record. Nothing will go on record.

श्री संजय निरुपम: सर, बुनियादी प्रश्न से जुड़ा हुआ तीसरा प्रश्न यह है कि आज मुम्बई के सारे अखबारों में ...**(व्यवधान)**...सर, मैं आज के बारे में कह रहा हूं ...**(व्यवधान)**... आज मुम्बई के सारे अखबारों में ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): वसीम अहमद साहब, आप तो चाहते हैं कि गृह मंत्री जी ठीक से उत्तर दे सकें, आप मेहरबानी करके जरा उनको अपनी बात कहने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...प्रधान जी, आप बैठिए। ...**(व्यवधान)**... निरुपम जी, अगर आप एक मिनट में समाप्त नहीं करते हैं तो मैं होम मिनिस्टर साहब से कहूंगा कि वे प्रारम्भ करें। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम: सर, मैं कम्प्लीट करता हूं, आप इन्हें बैठा दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप एक मिनट में समाप्त कीजिए ...**(व्यवधान)**... Please sit down. Shastriji, please sit down. Now the discussion ends. आप एक सेंटेंस में अपनी बात कहिए, तीसरी बात, और उसके बाद समाप्त। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम: सच बहुत कड़वा होता है।

...(व्यवधान)... मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा है। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Nothing will go on record. ...*(interruptions)*...शास्त्री जी, आप भी बैठिए। ...(व्यवधान)...आप एक सेंटेंस में अपनी बात कहकर खत्म करें क्योंकि समय काफी हो चुका है, इससे अधिक समय नहीं दिया जा सकता। ...(व्यवधान)...

श्री संजय निरुपम: सर उस बुनियादी ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): देखिए, अगर संजीदगी से ...(व्यवधान)... अहलुवालिया साहब, इस तरह से सदन को चलाने की परम्परा नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्री संजय निरुपम: सर, इन्हें बैठाइए, मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप बैठिए ...*(interruptions)*... If you do'nt want to listen to the Home Minister, you may go out ...*(interruptions)*... देखिए, यह परंपरा रही है कि नाम लिए जाते रहे हैं। आप सब नाम लेते रहे हैं, तरह-तरह के नाम लिए गए हैं। इसमें कोई ऐसा कारण मैं नहीं समझता हूं कि ...(व्यवधान)... अहलुवालिया साहब, देखिए कल यह हाउस 2 बार ऐडजॉर्न हो चुका है, गृह मंत्री महोदय नहीं आ सके या कुछ कठिनाई हुए। ...(व्यवधान)... Please take your seats. *(Interruptions)* Please take your seats. *(Interruptions)* Pleasc take your seats. *(Interruptions)* गृह मंत्री महोदय यहां मौजूद हैं। जिस बात को वे अनुचित समझेंगे, कह देंगे ...(व्यवधान)... यही कारण है जिसकी वजह से ऐकेडेमिक डिस्कशन में भी कहा जाता है कि अगर पार्लियामेंट न मिले तो यह देश बेहतर रहेगा ...(व्यवधान)... मेहरबानी करके गृह मंत्री को बोलने दीजिए ...(व्यवधान)... अहलुवालिया जी, आप बहुत सीनियर मेंबर हैं, कृपया गृह मंत्री को बोलने दीजिए ...(व्यवधान)...

कुछ भी रिकार्ड पर नहीं जाएगा ...(व्यवधान)... अगर कोई चीज अनपार्लियामेंटरी है, अनुचित है तो उसको मैं खुद लूंगा, उसको चेयर देख लेगी ...(व्यवधान)... अगर कोई चीज अनपार्लियामेंटरी है तो चेयर उसको देख लेगी। अब आप कृपया गृह मंत्री को बोलने दीजिए ...(व्यवधान)... अहलुवालिया जी, अब आप बैठ जाइए...(व्यवधान)... आपको जो विरोध करना था, आपने कर लिया। अब सदन की कार्यवाही चलने दीजिए ...(व्यवधान)...

Nothing will go on record. *(Interruptions)* Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

if he has said anything unparliamentary, then I will look into that. ...*(Interruptions)*...

यह कोई नई परम्परा का सवाल नहीं है। ...(व्यवधान)प्लीज टेक योर सीट। ...(व्यवधान) Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

अगर किसी ने किसी का कोई कागज या उसकी कोई चीज ले ली है, अनुचित तौर से फाड़ा है वह लिखकर दे और उसकी इंक्वायरी हो सकती है। ...(व्यवधान)

Nothing will go on record. Please take your seat. ...*(Interruptions)*...

वैसे भी मैंने जिंदगी में किसी का कोई सहारा नहीं लिया। यहां आपका सहारा है। अगर कोई गलती हुई है ...(व्यवधान)

Let your leader speak. ...*(Interruptions)*... Let Mr. Mukherjee speak.

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal): Sir, I was not present when this incident took place. As I enquired about it from my colleagues, they said that one hon. Member on the floor of the House took a paper from another Member and tore it off. I do not know; it is a question of fact. If some Members have seen, then this matter should be taken very seriously. Yes, we exchange our views and sometimes we may exchange heated discussion. But, it has never happened on the floor of the House that somebody snatches a paper and that too from a private Member. ...*(Interruptions)*... If it has happened, it is a case of gross misconduct and violation of the privilege of the House. Therefore, this matter cannot be taken very lightly. This matter needs to be taken very seriously.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Nothing is taken lightly. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRANAB MUKHERJEE: Sir, I am simply drawing the attention of this House that if this thing has happened, this has to be looked into because it is a case of gross misconduct and contempt of the House. It should not be taken lightly. This is my submission.

विपक्ष के नेता (श्री सिकंदर बख्त): सदर साहब, मैं इत्तफाक से यहां शुरू से मौजूद था और यह हंगामा शुरू हुआ किसी लफ्ज़ को विदड्रा करने के सिलसिले में। जो प्रणव जी ने कहा है, वह मेरे लिए बिल्कुल नयी बात है। मेरी समझ में नहीं आया कि कागज फटने की क्या बात हुई है। मेरा ख्याल है कि चेयरमैन साहब इसको अभी ऐक्जामिन करें कि वह पेपर किसके हाथ से लिया और कौन सा कागज लेकर फाड़ा गया? यह देख लिया कि किसी से कागज छीनकर फाड़ा गया है। कौनसा कागज फाड़ा गया है? क्या ऑफीशियल कागज फाड़ा गया है? ऐसा है तो इट रिक्वायर ऐन इनवैस्टीगेशन। मैं बिल्कुल इससे इत्तेफाक करता हूं। मेरी समझ में नहीं आया कि यह बात शुरू हुई थी कुछ लफ्ज़ विदड्रा करने के सिलसिले में और अल्टीमेटली यहां पहुंची है। इसलिए आप उसको अवश्य देखें।

†[نیتا ورودھی دل (شری سکندر بخت): صدر صاحب۔ میں اتفاق سے یہاں شروع سے موجود تھا اور یہاں ہنگامہ شروع ہوا کسی لفظ کو ودڈرا کرنے کے سلسلے میں۔ جو پرنب جی نے کہا ہے وہ میرے لئے بالکل نئی بات ہے۔ میری سمجھ میں نہیں آیا کہ کاغذ پھٹنے کی کیا بات ہوئی ہے میرا خیال ہے کہ چیرمین صاحب ابھی اسکو ایکزامن کریں کہ وہ پیپر کس کے ہاتھ سے لیا کونسا کاغذ لیکر پھاڑا گیا۔ یہ دیکھ لیا کہ کس سے کاغذ چھین کر پھاڑ دیا گیا ہے۔ کونسا کاغذ پھاڑا گیا ہے۔ کیا آفیشیل کاغذ پھاڑا گیا ہے۔ ایسا ہے تو اٹ ریکوائر این انویسٹی گیشن۔ میں بالکل اس سے اتفاق کرتا ہوں۔ میری سمجھ میں نہیں آیا کہ یہ بات شروع ہوئی تھی کچھ لفظ ودڈرا کرنے کے سلسلے میں اور الٹی میٹلی یہاں پہنچی ہے۔ اسلئے آپ اسکو ضرور دیکھیں۔]

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): Sir, I want to say something. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Please be very, very brief because one hon. Member has yet to speak and thereafter the Home Minister will reply. ...*(Interruptions)*...

DR. BIPLAB DASGUPTA: Sir, I did not notice what happened. It it happened, as reported by others then it is really shameful for all of us. It is going to give a very, very bad image to the House. Sir, I request you to take it with all seriousness and get this matter immediately investigated. If the person concerned does not apologise then he should be taken to task. This kind of activity gives a very bad name to the Parliament. It should not be tolerated under any circumstances. I would request you to take it with all seriousness. Our Leader of the Opposition has also made his point; Pranab Babu has made his point. In addition to whatever has been stated by other Members, I on behalf of my party strongly suggest that stringent measures should be taken for the vandalic behaviour.

†[]Transliteration in Arabic Script.

श्री एस०एस० अहलुवालिया (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, इस सदन में गरमा-गरमी चल रही थी। कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया था। मैं कुछ कागज लेकर आया था जो मराठी अखबार में छपा है। वह ऐसा दस्तावेज है जिसके बारे में हम जो खंडन करना चाहते थे उसे हम यह चाहते थे कि यह बात रिकार्ड में आए। उस दस्तावेज को शिवसेना के मैंबर ने हमारे मैंबर आदिक साहब के हाथ से छीनकर फाड़ डाला। महोदय, इस सदन में हर आदमी अपनी इनफॉरमेशन कलैक्ट करके लाता है, वह डिबेट में हिस्सा लेता है, ज्यादा से ज्यादा कांट्रीब्यूट करने की कोशिश करता है और सच्चाई को सामने लाने की कोशिश करता है। वह कागज ऐसा कागज था जो सच्चाई को उजागर करता है और वैसे सच्चाई के कागज को एक मैंबर के हाथ से दूसरे पार्टी के मैंबर द्वारा छीनकर फाड़ देना घोर अपराध है और हमारे प्रीविलेज के खिलाफ है। महोदय, हमें संरक्षण देना आपका फर्ज है। मैं आपसे मांग करता हूं कि मैंबर के खिलाफ कार्यवाही की जाए और मैंबर को ससपैंड किया जाए।

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Sir, I would like to know only one thing. ...*(Interruptions)*... Sir, I have only one point to make. Sir, we are discussing a very sensitive issue. Opinions may differ; and, opinions are differring. But, the point is whether this House of the Elders is in a position to discuss any issue without passions. If these passions run so high in this House, if there is any such unprecedented complaint—I am here for a pretty long time, I have never seen such a thing before—that a member has sntached somebody's papers—this has never happened before...*(Interruptions)*... Let me finish. ...*(Interruptions)*...

SHRI SIKANDER BAKHT: He is going to apologise to the House. Why do you drag it further ...*(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Sir, I am only saying that this situation should come to an end and the hon. Home Minister must reply. Otherwise, a wrong message will go out from this House ...*(Interruptions)*...

SHRI SATISH PRADHAN: Sir, the hon. Member wanted to say something. I request you to kindly listen to him ...*(Interruptions)*... It is on this problem only ...*(interruptions)*...

श्री मुकेश आर० पटेल (महाराष्ट्र): महोदय, एकदम सीरियस यहां बात हो रही थी तभी एक पेपर ड्रामा के तौर पर लाकर के उछालने लगे। वह मराठी पेपर था। ...**(व्यवधान)**... आप मेरी बात सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

SHRI S.S. AHLUWALIA: यह ड्रामा की क्या बात है। ...**(व्यवधान)**... He used the word 'drama' ...*(Interruptions)*... What does he mean by that? ...*(Interruptions)*... He should withdraw his word ...*(Interruptions)*... He should mend his language ...*(Interruptions)*... What does it mean? ...*(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Sir, he should withdraw his word. Otherwise, he should be suspended from the House ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप बैठिए। जो शब्द ...**(व्यवधान)**...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Sir, you asked me to stop, I stopped. Now, let the other hon. Members also stop speaking like this ...*(Interruptions)*... He is ready to apologise ...*(Interruptions)*... Why argument? ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): मैं ऐसा मानता हूं। ...**(व्यवधान)**... यह एक गम्भीर मामला है। कोई ऐसी परम्परा नहीं होनी चाहिए जिसमें यह पता लगे कि जिस तरह का आचरण और व्यवहार हमें करना चाहिए उसके विपरीत हम कर रहे हैं। मैंने भी देखा, यह सही है कि कागज लिए हुए दिखा रहे थे। मगर उसको ड्रामा इत्यादि शब्द कहना, हो सकता है कि वह भावनाओं के कारण आ गया हो यहां पर ...**(व्यवधान)**...

श्री एस०एस० अहलुवालिया: परम्परा उनको ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप सुन लीजिए। जो भाषा हो वह ऐसी होनी चाहिए, वह संयत होनी चाहिए। जब आपने यह कहा कि जो भी हुआ उसके लिए आप खेद प्रकट करते हैं तो इतना तो मैंने भी चेयर से देखा कि उनके हाथ में कागज था

क्योंकि मैं खड़ा हुआ था। आप लोग वैसे भी मीठी-मीठी बातें करते रहते थे। आप गए, कागज किसने फाड़ा यह देखन का सवाल ...(व्यवधान)...

श्री एस०एस० अहलुवालिया: सर, मैं मांग कर रहा हूं ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): अहलुवालिया साहब, यह वाह-वाह की आपको हमें कहने की जरूरत नहीं है। ...(व्यवधान)... आप यह वाह-वाही कहीं और दिया कीजिए। मैं न सदस्य की हैसियत से, न इस चेयर पर बैठकर इस तरह के दबाव में आता हूं। जब मैं कह रहा हूं कि मैंने आपको समय दिया और आप इन्टरेप्ट करके वाह-वाही करना चाहते हैं तो मुझे आपकी वाह-वाही की जरूरत नहीं है। मैं सदस्य से यह कह रहा हूं कि अगर आपने गलती की है, आपने जबरदस्ती उनसे कागज छीना है तो आप कृपया अपना खेद प्रकट करिए। क्योंकि इस तरह का व्यवहार मैं समझता हूं कि हमारी जो परम्पराएं हैं, उनके प्रतिकूल है।

श्री मुकेश आर० पटेल: सर, मैं मांफी मांगने के लिए तैयार हूं। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप कहिए कि मैंने ...(व्यवधान)...

श्री संजय निरुपम: सर, मुझे बोलने का मौका दिया जाए। ...(व्यवधान)... सर, मुझे मौका दिया जाए ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): सदस्य ने माफी मांग ली है, जो भी हुआ उसके लिए खेद प्रकट कर दिया। ...(व्यवधान)... इसलिए यह अध्याय समाप्त होना चाहिए। ...(व्यवधान)...

श्री संजय निरुपम: महोदय, मुझे भी बोलने दिया जाए। ...(व्यवधान)...

SHRI GOVINDRAO ADIK: Sir, I am on a different point of order.

श्री अजीत जोगी: पहले माफी मांगने दें ...

श्री संजय निरुपम: मुझे तो बोलने दीजिए। सर, मैं सदन का बहुत ही जूनियर सदस्य हूं और मुझे फख्र है कि मैं इस सदन में वरिष्ठ सदस्यों के साथ काम करता हूं। सदन की परम्पराएं मैं सीख रहा हूं, सीखने की कोशिश करता हूं, अपने वरिष्ठ सदस्यों के साथ मैं बैठता हूं। मुझे नहीं पता कि मेरे पास कौन-सा पेपर आया, एक पेपर आया था। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप अपना खेद प्रकट करें अगर आपने कोई कागज फाड़ा। कोई कागज आया, कहीं से भी आया और कैसे भी आया, आपने उसको यहां फाड़ा है, जो कि उचित नहीं है।

श्री संजय निरुपम: मैंने इस सदन में नई परम्परा सीखी है कि सदन में जो कागजात पेश किए जाते हैं, उन कागजात के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। मुझे इस बात का खेद है, मैंने यह गलती की है। मैं तमाम लोगों से इसके लिए क्षमा चाहता हूं, माफी चाहता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Please do not drag on the matter. Do not waste the time of the House ...*(Interruptions)*... Please do not drag on the matter ...*(Interruptions)*...

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI (Kerala): Sir, it is not only the issue of firing against the Dalits in Maharashtra which creates anxiety, but the entire law and order situation in the State is slowly worsening and degeneration of one of the greatest cities in the country is in process. The Government of the State must apologize to the nation for the happening which took place on black Friday, the 11th July. The residents of Bombay's Ramabai Nagar have not yet recovered from the fear of cruelty of police action. Considering the total failure of law and order in Maharashtra, the Central Government should rise to the occasion and should without waiting for assurances from any quarter, dismiss the State Government.

The recent attack on Dalits in Maharashtra is not a new one. It is the continuation of an old animosity of casteist and communal forces towards the dowtrodden sections of society. In 1988, Dalits were attacked in connection with the controversy over Ambedkar's book "Riddles of Hinduism".

Again in 1994, they were harassed when the then Government decided to rename the Marathwada University in honour of

Dr. Ambedkar. Eleven Dalits were killed and forty-one of their settlements were attacked by the infuriated sectorian and casteist forces. on 27th January, this year, the murder of a Dalit youth in Aurangabad caused large scale riots. On 16th march another Dalit youth was killed in Ahmednagar. When a statue of Dr. Ambedkar was desecrated...*(Interruptions)*...

THE VICE CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Please be brief.

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI: The firing was completely unprovoked. It could have been avoided. But, it was done with intent to kill.

The polic atrocities in the Bombay incidents have already been bitterly criticized by everybody. In Ramabai Nagar stones were pleted and acid bulbs were thrown on the houses of Dalits. When the poor seople of the area asked for help, the police, instead of finding out the cultprits and arresting them, entered the houses of Dalits and beat them ...*(Interruptions)*...

PROF. RAM KAPSE: Can a Member read out his speech in the House...*(Interruptions)*... He is reading.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): वे पढ़ नहीं रहे हैं, वे नोट्स कंसल्ट कर रहे हैं।

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI: Even old men resting in the corridors were not spared.

On the day of Bombay Bandh, 12th July,—Called in protest against police firing—the workers of *Sena* passed through the main road of the city waiving swords and forcing shops to remain open. The residents of the slum area—the majority of whom are neo-Buddhists—were harassed by these trouble-makers, but nobody stopped them and the police just watched the scene.

The actions of the police in the city are completely discriminatory. They raided Ambedkar Nagar and young men were picked up for questioning.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): अब आप समाप्त कीजिए।

SHRI M. P. ABDUSSAMAD SAMADANI: These innocent young people were charged with rioting and were beaten up. The women residents of the area marched to the police under the leadership of their woman corporator. These sisters demanded nothing but the release of their sons and husbands. They were also abused badly by the police authorities.

When we criticize the police atrocities or inaction, as the case may be, let not ignor the political interference which caused the failure of police department in the State. The politicians in Maharashtra are compelling the police to act according to their whims and fancies. The police is blindly following the instructions which come from their political *Rajas*. Amidst this play nobody is caring for the law and order; and the common man is suffering.

It is said that the police officers of Bombay are in the habit of meeting the supreme leaders of the ruling parties almost everyday to pay respects to them.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): जनरल पुलिस को कंडेम मत कीजिए।

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI: Against this background, the attack on the Opposition leaders is to be seen with unusual seriousness. Thus, the situatin gives rise to questions about official sanction, if any, behind the attack. A politicized police force can never enforce the law as laid down in the statutes.

The so-called assurance that the hon. Home Minister has got from a leader of the State will not save the situation. Instead of sitting satisfied with these assurances on the part of a non-Government agency, the Central Government should compel the State Government to be answerable for the

atrocities. The clear example of the fascist forces getting more and more stronger in Maharashtra can be very well seen in the severe assult on the press which is considered as one of the major pillars of the democratic system. The scribes belonging to the 'Asian Age' and the 'Maharashtra Times' and other newspapers were attacked during this month. All these things only lead to making the minorities and the backward classes more sullen and disillusioned.

Efforts were being made to bridge the gulf in the communal relations. But, unfortunately for the nation, after the advent of the new Government in the State, attempts were intentionally made to widen this gulf. This the nucleus of the problem and real tragedy.

Sir, the change of name from the cosmopolitan 'Bombay'...

THE VICE CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Mr. Samadani, you have to conclude now. there is not much time left.

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI: Just one minute, Sir.

SHRI AJIT P.K. JOGI: Last page.

...(Interruptions)

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI: I am concluding.

The change of the name of the city from the consmopolitan 'Bombay' to the parochial 'Mumbai' has been the symbol of the emergence of unhealthy trends in the State. Violence is spreading in different parts of the State. The rise of the mafia has contributed much to this state of affairs. It is in the shadow of politics and politicians that the mafia widens its sphere of influence and escapes from the law.

In Maharashtra, certain political parties and leaders are exploiting the disillusioned and unemployed youth for their own purposes. Senas after senas are organised in the State, using the youth.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आपके नोट्स बहुत लम्बे हैं।

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI: I am concluding, Sir. Just two sentences.

It is the duty of every responsible political party which respects the Constitution and the rule of law in the country to stand united in checking this unfortunate growth of violence and rescuing the youth from it. It is painful that those areas of Bombay where the majority of the residents are Ambedkarites, who are against every kind of militancy, are slowly getting influenced by these violent elements. Sir, the Central Government cannot remain a silent spectator. I would, therefore, request the Home Minister and the Central Government to dismiss the State Government of Maharashtra at the earliest.

Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Mr. V.P. Duraisamy. Only three minutes.

I am permitting Mr. Duraisamy, the leader of the Congress Party, Mr. Chavan, and Mr. Shirodkar, because he was permitted by the Chair. *Interruptions)* I am afraid, there is no time thereafter. *(Interruptions)*

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, we have not consumed the time allotted to our party, whereas, Members from other parties have exceeded their time. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): The Home Minister would be waiting. *(Interruptions)*

PROF. RAM KAPSE: Sir, on a point of order. *(Interruptions)*

Sir, it is very important. Just now, the hon. Member, while reading out his speech, referred to the renaming of 'Bombay' as 'Mumbai'. While referring to

it, he had cast some aspersions. I would request you to go through the speech and it needs to be...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): मैं हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था। त्रिवेन्द्रम का नाम बदला गया है केरल में। बहुत से नाम बदले गए हैं। इस वक्त नयी चीज़ों को नहीं लेना चाहिये। ऐसा कुछ नहीं है।

SHRI JOHN F. FERNANDES (Goa): He has not used any unparliamentary word.

श्री सूर्यभान पाटिल वाहादने (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं महाराष्ट्र से आया हूं। इस विषय पर चर्चा होने से पहले मैंने अपना नाम दो दफा लिख कर दिया है। मुझे बोलने का अवसर नहीं मिला।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): अगर बीच में कोई हस्तक्षेप नहीं होगा तो आपको अवसर दे देंगे। **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Now, Mr. Duraisamy, please.

SHRI V.P. DURAISAMY (Tamil Nadu): Thank you, Mr. Vice-Chairman. It is with a great shock and sorrow that I rise to speak on the police atrocities on the Dalits in Maharashtra on 10th July, 1997. The neo-Buddhists, the Dalits, in the thickly populated Ramabai area are yet to recover from the shock of the police firing.

Sir, generally, in the last three days all the senior political leaders have made their speeches to stop firing on Dalits. We have also been cross-firing each other.

I want to say that after the firing incident, the State Government has passed an order to institute an inquiry commission manned by Revenue authorities or judicial officers. Mr. Vice-Chairman, you know very well that the Central and the State Governments have appointed inquiry commissions hundreds and thousands of times. But, after obtaining their reports, no Central Government or no State Government has placed them before Parliament or the Assembly or has accepted the recommendations made by those commissions. What is the use of instituting such an inquiry commission? Will the affected persons be rehabilitated? Can the sin, the wrong, committed by the police be removed from the bodies of the victims?

Apart from that, I want to offer some valuable suggestions to stop the firing on Dalits. If it is Andhra Pradesh or Uttar Pradesh....*(Interruptions)*

Only the Dalit people become the victims. They are losing their lives. They are losing their properties. They are losing everything else.

Till this minute, the Maharashtra Government has not booked any case. Till this minute, we do not know who were involved in the desecration of the great leader, Ambedkar. After knowing the desecration of their leader, it is the duty of Dalits, and they have every right, to register their protest.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): You have made your point. I am afraid, it is not possible to continue just indefinitely.

SHRI V.P. DURAISAMY: Three minutes are not yet over.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Three minutes are already over. It is six minutes now really.

SHRI V.P. DURAISAMY: The Tamil Nadu Chief Minister requested the Chief Minister of Maharashtra to start the Ambedkar University. That Government has already started the Ambedkar University. They have also thanked the Tamil Nadu Chief Minister.

To construct a casteless community, all political leaders should request the Government of India to ask the State Governments to bring a legislation encouraging intercaste marriage. The Tamil Nadu Government has reserved 3 per cent of vacancies to them.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Thank you. संक्षेप में आप बता दीजिए, गृह मंत्री जी उनको नोट कर लेंगे।

SHRI P.V. DURAISAMY: I am offering suggestions. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Let him finish it. He is finishing it.

SHRI V.P. DURAISAMY: The Tamil Nadu Chief Minister is the only Chief Minister who has taken a marriage alliance from a Harijan girl. He is a pioneer, a leader, in creating such an alliance. As long as Tamil Nadu is on the map of India, no Tamilian can forget the Kariankulam incident where hundreds of Scheduled Caste people lost their lives and everything else.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Do not bring in extraneous matters. ....*(Interruptions)*

The Home Minister is here to reply on that. ...*(Interruptions)*

Please. No.

SHRI V.P. DURAISAMY: It is the duty of Dalits.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Please. You have finished. *(Interruptions)*

Nothing will go on record. You have finished. You have made your point. ...*(Interruptions)*

No, nothing. ...*(Interruptions)*

You have said it very adequately and very effectively. The Home Minister will take note of it. But let him at least have a chance. ...*(Interruptions)*

You have finished. ...*(Interruptions)*

Now you have finished. You wanted two minutes. I have given you six minutes.

Now, Mr. Gandhi Azad. He is from the B.S.P.

श्री गांधी आजाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन को अवगत कराना चाहता हूं कि 11 जुलाई को जो महाराष्ट्र में घटना घटित हुई है वह महाराष्ट्र के लिए नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए शर्मनाक है। सदन में बार-बार सदस्यों द्वारा कहा गया है कि पुलिस द्वारा 11 जुलाई को 10 दलितों की हत्या की गयी है। लेकिन हमारा मानना है और मैं इस सदन के माध्यम से बताना चाहता हूं कि 10 दलितों की नहीं बल्कि भारतीयों की हत्या की गई है। पहले हम भारतीय हैं और इसके बाद दलित या किसी जाति, धर्म और सम्प्रदाय के हैं। आज हम आजादी की स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रहे हैं लेकिन आज तक इस देश में जो वर्णवाद एवं जातिवाद रूपी जहर व्याप्त है उसे समाप्त नहीं कर पाए हैं। आज जो इस प्रकार की घटनाएं घट रही हैं इसी जातिवाद, वर्णवाद एवं साम्प्रदायवाद के कारण ही हो रही हैं। आज हमें इस सदन में खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि आज भी हमने अपने देश के महापुरूषों को उनके कृत्य के आधार पर नहीं बल्कि जाति एवं धर्म के आधार पर परिचय देते हैं। हमारे विचार से देश का कोई भी महापुरूष हो किसी भी जाति या धर्म से संबंध रखने वाला हो किसी के साथ अपमानजनक घटना पूरे देशवासियों के लिए कलंक है। देश के सारे महापुरूषों के सम्मान की सुरक्षा की गारंटी देना हमारी सरकार का नैतिक कर्तव्य है। अगर देश या प्रदेश की सरकारें अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करती हैं तो कम से कम नैतिकता के नाते उन्हें अपनी कमियों, कमजोरियों को तो स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि गलतियों को यदि हम स्वीकार करते हैं तो कम से कम आगे उसकी पुनरावृत्ति नहीं हो पाती। लेकिन हमें खेद है कि इसी सदन में राजनैतिक द्वन्दता के कारण हमारे कुछ विद्वान साथी यह भी कहते सुने गए हैं कि अमुक पार्टी के काल में यह घटना घटी, अमुक पार्टी के काल में यह घटना घटी अर्थात् शर्मनाक घटना घटित होने में भी होड़ लगाए हुए हैं जो बहुत ही शर्म की बात है। मैं आपके माध्यम से सदन को अवगत कराना चाहता हूं कि कीचड़ से कभी कीचड़ साफ नहीं होता। अगर कीचड़ को साफ करना है तो साफ पानी की आवश्यकता होगी। अतः आज देश में साफ पानी के रूप में आपसी भाईचारा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण की जरूरत है। जब तक इस देश में जातिवाद, धर्मवाद, संप्रदायवाद समाप्त नहीं होगा तब तक इस तरह के नग्न प्रदर्शन होते रहेंगे। इसलिए मैं आपके माध्यम से सदन को अवगत कराना चाहता हूं कि इस देश में रहने वाले सभी नागरिकों को भारतीय बनाकर भाईचारे का बीच अंकुरित करना होगा तब हमारी

और हमारे महापुरुषों के सम्मान की रक्षा हो सकेगी। मैं आपके माध्यम से सरकार को अवगत कराना चाहता हूं कि सरकार द्वारा देश के सम्पूर्ण राज्यों में एक निर्देश जारी कर दिया जाए कि किसी भी महापुरूष की मूर्ति की सुरक्षा आदि की व्यवस्था उस प्रदेश के शासन और प्रशासन की जिम्मेदारी होगी।

अंत में मैं यह कहना चाहूंगा कि दोषी समस्त पुलिसकर्मियों को दंडित किया जाना चाहिए क्योंकि उन पुलिसकर्मियों का कृत्य अपराधियों से बढ़ कर है। मैं मानता हूं कि डा० अम्बेडकर की मूर्ति के अपमान करने पर उत्तेजना जरूर हुई होगी, भीड़ जरूर उग्र हुई होगी, किन्तु भीड़ को नियंत्रण में करने हेतु आंसू गैस, पानी का फव्वारा, लाठी जार्च, रबड़ की गोलियां ये सारी कार्यवाहियां गोली चलाने से पूर्व करनी चाहिए थीं। लेकिन जहां तक अखबार के माध्यम से और किसी माध्यम से ये बातें प्रकाश में आईं। ये सारी प्रक्रिया कोई भी नहीं की गई।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आजाद जी, अब आप समाप्त करिए।

SHRI JOHN F. FERNANDES: It is his maiden speech, Sir.

श्री गांधी आजाद: महोदय, यदि गोलियां चलाई भी गईं तो कमर के नीचे चलानी चाहिए थीं। लेकिन जो भी लोग मारे गए हैं उन सब के कमर के ऊपर से गोली लगी हुई है। इस तरह से यह प्रमाणित है कि पुलिस द्वारा जघन्य अपराध किया गया और जान-बूझ करके यह अपराध किया गया है। इसलिए दोषी पुलिसकर्मियों को दंड देना चाहिए। मैं सदन के माध्यम से सरकार से यह मांग करता हूं कि जो यह 10 भारतीय मारे गए हैं, महाराष्ट्र सरकार मुआवजे के रूप में उनके परिवारजनों को पांच पांच लाख रुपया दे और केन्द्र सरकार भी उनके परिवारजनों को पांच-पांच लाख रुपया दे।

अंत में, मुझे बोलने का समय देने के लिए मैं आपका आभार प्रकट करते हुए अपनी बात को विराम देता हूं। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): बहुत बहुत धन्यवाद आजाद जी। सूर्यभान पाटिल जी, आप तीन मिनट में अपनी बात कहकर समाप्त करें क्योंकि अब समय अधिक नहीं है।

श्री सूर्यभान पाटिल वाहादने: उपसभाध्यक्ष महोदय, पहले तो मैं बेक बेंचर हूं, जूनियर हूं, भाषा की कठिनाई है, महाराष्ट्र से आया हूं और आप कहते हैं कि एक, दो, तीन मिनट में खत्म करूं। सांस लेने के लिए भी आधा मिनट, एक मिनट लगता है।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): ऐसा है, अभी चव्हाण साहब भी महाराष्ट्र की बात करेंगे, दो सवाल शिरोडकर साहब को भी करना हैं।

श्री सूर्यभान पाटिल वाहादने: ठीक है, सर। सबसे पहले इस चर्चा में बोलने का जो आपने अवसर दिया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं भावनात्मक, अतिश्योक्तिपूर्ण, वस्तुस्थिति को अनदेखा कर वक्तव्य नहीं करूंगा। इस घटना में तीन सवाल पैदा हुए हैं—डा० बाबा साहेब अम्बेडकर की प्रतिभा का अपमान, गोली-बारी में 10 दलितों की हत्या और विपक्ष के नेता के निवास पर हल्ला। यह तीन चीजें निकलकर सामने आई हैं और मैं इन तीनों चीजों की निन्दा करता हूं, निषेध करता हूं।

दूसरी बात, देश के गृहमंत्री महोदय इस घटना के बाद मुम्बई आए। दो दिन वहां ठहरे। डा० बाबा साहेब की प्रतिमा का सम्मान किया, कालोनी में गए, जो मृतक थे उनके घर गए, जो जख्मी थे उन्हें देखने हॉस्पीटल में गए, राज्य के मुख्यमंत्री, राज्य के उप मुख्यमंत्री, राज्य के राज्यपाल, शिवसेना के श्री बाला साहब ठाकरे और अनेक पार्टियों के जो शिष्टमंडल आए, उनसे उन्होंने मुलाकात की, भेंट की। स्थिति देखकर यहां दिल्ली चले आए, गुजराल साहब से मिले, चर्चा हुई और बाद में लोकसभा में उन्होंने बयान दिया। जो उन्होंने बयान दिया, वह बयान बेलेन्स्ड था। इसलिए मैं गृहमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं।

महोदय, मैं यहां सब चीजें दोहराना नहीं चाहता, लेकिन भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना के बारे में कोई आरोप लगाए गए हैं, उन पर जरूर बोलूंगा। बगैर कोई इन्क्वायरी के वहां की सरकार को, भारतीय जनता पार्टी, शिव सेना को सूली पर चढ़ा दिया जाए, ऐसा वक्तव्य मैंने सुना और यह भी कहा गया कि यह फासिस्ट हैं, यह जातिवादी हैं, यह प्रतिगामी हैं, यह लोकशाही विरोधी है, दलित विरोधी हैं, आदि आदि। इस तरह के कई आरोप यहां लगाए गए है। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी-शिवसेना की सरकार को महाराष्ट्र में आए ढाई वर्ष हो गए। मुम्बई में इसके पहले गेंगवार होते थे, हमेशा चलते थे, लेकिन इस ढाई वर्ष के कार्यकाल में एक भी गेंगवार नहीं हुआ। सब गैंगवार करने वाले जो होते थे, 60 के ऊपर

लोगों को मृत्युदंड हो गया। आपने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि गवली डॉन, अभी वह पोलिटिक्स का सहारा ले रहा है। ऐसी स्थिति बनी है, मुम्बई जो गैंगवार से ग्रस्त थी, उसको भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना की सरकार ने छुटकारा दिलाया है। यह बात आप मानिए।

महोदय, दूसरी चीज, आरोप आया कि यह प्रजातंत्र को मानते नहीं, लोकशाही मानते नहीं, वहां करप्शन है, आदि आदि। मैं एक चीज बताता हूं, महाराष्ट्र में अन्ना हजारे नाम के एक सोशल वर्कर हैं, बहुत बड़े नेता हैं, उन्होंने दो मंत्री पर आरोप लगाया तो इन्क्वायरी कमीशन की बात आई, दो मंत्री के खिलाफ आरोप थे, सरकार ने उसको निलंबित किया। रिपोर्ट आ गई। एक को वैसे ही निलंबित रखा है और एक को फिर से केबिनेट में ले लिया है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि पूरे देश में कोई ऐसी स्टेट है कि 50 साल बरस में किसी ने आरोप लगाया और कमीशन बैठाकर कार्रवाई की, एक भी स्टेट में ऐसा नहीं है। घटना होने के बाद हमारे कांग्रेस के मित्र ने विधान सभा में मांग की, हमारे रेल मंत्री श्री पासवान ने मांग की, एक और मांग आई इन्क्वायरी की, हाई कोर्ट के जज की इंक्वायरी की मांग की गई, समयबद्ध इन्क्वायरी हो, यह भी मांग की गई और जितनी मांगें थीं, सब पूरी की हैं। दूसरी चीज़ यह है कि जो विपक्ष के नेता के निवास पर हल्ला हुआ था तो तीन पुलिस अफसर सस्पैंड किए गए हैं। 47-50 तक, जिन्होंने हमला किया था, उनको गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के कानून के तहत जितनी करने वाली चीजें थीं, उनको किया गया है। इन दोनों को अच्छी तरह से संरक्षण दिया गया है। जो प्रतिमा मुम्बई में है, उसके संरक्षण के लिए सरकारी कार्रवाई भी की गई है।

मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि आज ढाई वर्ष में एक भी जातीय, साम्प्रदायिक, धार्मिक या कोई इस तरह का तनाव नहीं हुआ, संघर्ष नहीं हुआ, जुलूस नहीं निकाला गया। ढाई वर्ष में कोई इस तरह का कार्य नहीं हुआ है, यह मैं सदन के सामने बताना चाहता हूं, लेकिन ढाई बरस छोड़ दें तो वहां पिछले 50 सालों में हमारे कांग्रेस के मित्र पॉवर में थे, सत्ता में थे। वह सत्ता चली गई तो दुखी हैं, निराश है, बहुत कष्ट में है और यह सोचते थे कि क्या करें। अढाई वर्ष के काल में महाराष्ट्र में जितने जनता के सवाल थे, एक भी सवाल पर जुलूस नहीं निकला, लेकिन इस घटना के बाद, उसका फायदा उठाने के लिए हमारे कांग्रेस के मित्र यह सब कर रहे हैं और भारतीय जनता पार्टी-शिव सेना को कह रहे है कि यह फासिस्ट हैं, यह प्रजातंत्र के विरोधी हैं, यह जातिवादी हैं। मैं यह सवाल पूछना चाहता हूं कि हमारी एक स्टेट के एक चीफ मिनिस्टर कहते हैं कि अगर मेरी कुर्सी पर आंच आएगी तो इस देश में खून की नदियां बहेंगी, मैं जेल से राज करूंगा, यह सब क्या है? तो बाबा साहब अम्बेडकर और उनके संविधान की धज्जियां कौन उड़ा रहा है और इन सब में उनके साथ कौन सहायता कर रहा है? हमारे कांग्रेस के मित्र उनको सहायता कर रहे हैं। करप्शन के बारे में और जो कुछ हो रहा है—दिन-दहाड़े दलितों की बस्तियां जलाई जा रही हैं, पशु खाद्य घोटाला है, भूखंड का मामला है—उसके बारे में कोई बोलता नहीं है। वहां सी०बी०आई० के ज्वाइंट डायरेक्टर श्री यू०एन० बिस्वास ने कोर्ट के सामने, कोर्ट में उन्होंने कहा है कि हमारे जितने अधिकारी और कर्मचारी हैं, उनकी जान को खतरा है। इतना होते हुए भी हमारे कांग्रेस के मित्र बोलते नहीं हैं, उनकी सहायता करते हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि इस ढाई वर्ष के कालखंड में कई अच्छे निर्णय लिए गए हैं। एक बात जो दलितों के ऊपर गोलीबारी के बारे में आई, तो अगर वे फायरिंग नहीं करते तो दो-तीन किलोमीटर के अंदर बहुत अधिक मानव हानि, वित्त हानि और कई प्रकार की हानि होने वाली थी। ये सब चीजें जो उठाई गई हैं, ये सब चीजें कमीशन के सामने आने वाली हैं, कमीशन उनकी जांच करेगा, लेकिन बगैर कमीशन की रिपोर्ट आप भारतीय जनता पार्टी-शिव सेना की सरकार, जो ढाई साल से वहां काम कर रही है, अच्छे काम कर रही है, जिसने गैंगवार खत्म किया है, जातिवाद खत्म किया है, ऐसी सरकार पर धारा 356 का अमल करना, यह जनतंत्र विरोध कदम होगा, यही मेरा कहना है। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): शिरोडकर साहब, आपको क्या सवाल पूछने हैं दो, जिसके लिए आपको परमिट किया था उस वक्त?

SHRI ADHIK SHIRODKAR (Maharashtra): Sir, the first aspect to which a repeated reference was made yesterday was the withdrawal of cases alleging that it had an anti-Dalit facet. In the Criminal Procedure Code, which is a Central enactment there is a provision which makes it obligatory upon a prosecutor in each case to make an application mentioning therein his personal satisfaction for the withdrawal of the case. Even then, it is for the court to decide

whether to allow the withdrawal or not. Therefore, whenever there is a withdrawal, these two conditions precedent are always complied with, and if anybody is dissatisfied with such an order, he has a right to move the High Court. None of our friends who are now alleging that it had an anti-Dalit facet, have ever done it. It is obviously to take a political mileage knowing that they could not have succeeded.

The second aspect to which a repeated reference has been made is that the attack was unprovoked, that the firing was unprovoked and unjustifiable. I am not going into the mertis of it. But a duly constituted Commission has been appointed, presided overby a sitting judge of the Apex Court of Maharashtra, that is the High Court. That Commission has a right to go through the entire evidence. It is unfettered by the Evidence Act. Anybody can approach it by way of an affidavit, can give evidence showing the allegations they want to make. Instead of making them here, take them before the competent authority, prove your allegations and then come before the august House in justification thereof. Without going there, no purpose will be served because that matter now is *sub judice,* and that is what ought to be done.

Now, I come to the third point, namely, invoking the powers under the Constitution for dismissal of a Government. There are two articles before that which necessitated that it should be followed and unless that is done, no Government can be dismissed. Therefore, these aspects may be kept in mind and without politicising the issue, which is a very sensitive issue, I appeal to everybody to stop this discussion. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Mr. Chavan, I hesitate to request you to be brief.

SHRI S.B. CHAVAN (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, Sir, I am extremely grateful to you for allowing me to sepak, though the time allotted, in fact, has been exhausted long back. There are certain issues about which this House as a whole will have to consider as to what needs to be done. This has been happening so many times in some parts of the country or the other. In Mumbai, the way the whole thing has happened, in fact, deserves condemnation, and I condemn it. It is not proper that unnecessarily some interested parties should try to politicise the entire thing, and thereafter, try to attach importance to things which deserve to be objectively looked into. First of all, since the hon. Home Minister is going to reply, I would expect a reply from him on this point. The police got information about this dastardly sort of action. on the part of someone, who seems to have desecrated the statue of Dr. Babasaheb Ambedkar. The police was informed about the incident at 6.30 in the morning, and thereafter, for almost 2 1/2 hours, the situation remained the same. even after the police having been informed about the garland, why is it that it was not removed? Might be, a plea might be made that they wanted to have some kind of evidence to show that, in fact, the garland of chappals was there. You could have taken a photograph of the garland and remove it immediately. I do not know what exactly was the motive behind keeping the garland for such a long time and giving an opportunity to other people to get agitated. You cannot blame the people who, in fact, worship Dr. Babasaheb Ambedkar as their saviour. There is nothing to be surprised if people gathered in such a large number within no time. So, in order to remove that sort of a provocation it was very necessary that it should have been done immediately. I would like to have the factual information. I am not interested in what the Commission is going to do. The Commission is bound to take some time.

श्री सूर्यभान पाटिल वाहादने: प्रतिमा के ऊपर जो कुछ किया था चप्पल आदि को, वह निकाला नहीं था।

श्री संजय निरुपम: वह आर.पी.आई. के लीडर है।

SHRI S.B. CHAVAN: In fact, situation could have been saved by removing the garland of chappals and not allowing the kind of provocation and, in fact, a proof could have been secured by taking a photograph. If you had taken the photograph, in fact, people would not have been infuriated as they did thereafter. That is the first point on which I would like to know the factual information.

The second point is that, according to Shri Sushil Kumar Shinde, there were two tankers. He explained it at great length. He had produced a map also saying that they were far away. It is for the Commission or some other authority to go deep into the matter and find out whether they were empty or full. If they were full, of course, there was definite case for allowing some kind of force to be used. But if they were empty, then, of course, you didn't have that kind of an excuse. This has been repeatedly stated by almost all the Commissions which were appointed in Maharashtra and in other States also that you have to give some kind of an orientation to the police force which has to use some kind of a force to control the situation. We would like to understand as to why, in the case of all those who have been killed, all the bullets are either on their chest or on their head. Why is it so? Is it really that they were firing with a view to kill the persons or that they wanted to save the situation and control the mob? If that was the intention, why is it that this kind of a firing was indulged into? This definitely requires an explanation. A serious note will have to be taken about those officials who, before resorting to firing, had not taken the precautionary measures. This is the first mistake and normally this happens. This dosen't happen all of a sudden. This brews two or three days before. Some kind of a planning is always there. It is the intgelligence agency which has to report to the police and also to the executive that such and such incident is bound to happen. Thereafter, when the situation arises, the first thing that they have to do is to inform everybody concerned that now the situation has come to this level and we are bound to resort to firing. Such kind of a warning has to be given. Was it given? It was not. According to my information, whatever I have heard, this kind of a warning was not given at all. Thereafter you have raised special force which is supposed to go into such an handling of mob. Rubber bullets could have been used in order to see that mob had been dispersed. You have water hose pipes. You could have used that also. Even after that if the situation was uncontrollable, then the last resort was firing. But firing has to be done in a proper manner. If it was not done so, it shows total callousness on the part of the police officials who, in fact, were on the spot and who were expected to study the whole situation properly and then take the action.

These are three issues on which a serious thinking needs to be done. At least I feel that and exemplary punishment should be given to all those who are involved in this kind of a reckless firing on a mob which had every reason to get provoked. I cannot say that they should not have got provoked. They had every reason to get provoked. But it was the duty of all others to see that the mob was properly controlled and dispersed and all precautionary measures were taken. This should have been done. Now I don't want to go into all the details. The Leaders of the Opposition of both the Assembly as well as the Council were attacked dastardly. Their official houses were attacked. Everybody knows who the persons are who are involved in it. In spite of that why no prompt action has been taken? On the other hand, some responsible people seems to have said, "No, we are bound to react this way. He cannot expect any better treatment". I

don't think this kind of an attitude should be adopted by a person who is in a responsible position. So they cannot justify by any standards the attack on the Leaders of the Opposition that are the very roots of functioning of the democratic system in the country. In a State like Maharashtra which is a very enlightened State, dissent is always heard with great respect. Have we come to a stage where we are not prepared to listen to others point of view and we are going to attack the person who feels in this manner? This is a matter about which I am absolutely clear in my mind that very strihgent action requires to be taken against all those who are involved in it. Whether article 356 needs to be applied or not, this matter has now become justiciable after the Supreme Court judgment. That is why he will have to properly consider all aspects of the question. If legally he cannot do something, then some kind of an exemplary action is called for to handle a situation of this nature so that all the dalits who are normally get attacked, can be protected. They are in a very pitiable condition. My friend Shri H. Hanumanthappa was forced to say, "Where can we go? We have to live here." If this kind of a social condition is going to continue, then, of course, the very foundation of our democratic set-up itself is going to be totally eroded.

These were the points which I wanted to bring to the notice of the Home Minister. I am sure while replying to the debate he would answer all these questions.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI INDRAJIT GUPTA): Mr Vice-Chairman, Sir, this is not exactly a very propitious atmosphere to conclude the debate on such an important matter of recent happenings in the enlightened State of Maharashtra. However, I apologise for not having been present in the House during the discussion on this subject yesterday. I was required to be present in Lok Sabha where an Adjournment Motion moved by the Leader of the Opposition was being discussed.

I thank all the hon. Members here for their views and valuable suggestions which they have made during the discussion. It is needless to say that I also fully share the concern, the deep concern, which has been expressed by almost all the Members regarding the atrocities on dalits in general and police firing in Mumbai in particular.

I would have been benefited if the senior leader and my predecessor in office, Shri S.B. Chavan, had also tried to give some suggestions. At the moment I am not in a position to give any practical suggestions as to how to deal with this problem of desecration of statues. There are thousands of statues. In Maharashtra alone, if somebody makes a statistical record of the statues of Dr. Babasaheb Ambedkar, Jyotibhai Phule, even Lord Buddha, Chhatrapati Shivaji Maharaj, they will run into thousands and it is not a difficult job to desecrate one statue somewhere and for the culprit to remain untraced, to manage to get away. These are acts of provocation in my view, deliberately done in order to provoke a certain section of our people, a particular community and to provoke them to get excited and angry to the point of some kind of action which would perhaps later on enable them to be victimised. Just now I received a report, Sir, from the Intelligence people saying that on the night of 27th/28th a statue of Lord Buddha in Yeotmal district has also been desecrated. So far we do not know of any consequences of this action but this kind of a thing can go on endlessly. So, this is one matter on which I am thinking that perhaps a small committee of Members of different parties should be set up which would go deeper into this whole question because in our country, in our society these statues have become

symbols to people with various kinds of loyalties, allegiances, symbols of certain sentiments, emotions — religious, social and otherwise, and the committee can pool their ideas and their brains and try to suggest if there are some ways and means; I know no fool-proof system can be devised, but some way of dealing with these statues in future can be devised. That is one thing. I am grateful to Mr. Chavan for two or three other points which he has raised. I do not wish to pre-empt the findings of the Judicial Commission. I cannot function here as a parallel Judicial Commission. It is not my job and it is not correct. Since a Judicial Commission has been appointed and I think they have to go into all those circumstances which led to the fire, it is better not to speculate on what actually happened and perhaps we have to wait until the findings are there. One thing is there. There is a continuous reference to the mob. Well, mob or no mob, I do not know; 'mob' is a word I do not like. 'Mob' sometimes implies that people making up that mob, perhaps indulged in some kind of violence, threw brickbats at the police or somebody. Well, without waiting for the Judicial Commission and its findings, I can assure you on the basis of my visit to that area and the talks I had with various people there, nobody up to today has made any allegation that the people who assembled near the statue of Dr. Ambedkar that morning when it was found that it had been desecrated, indulged in any kind of violence. There is nothing like that on record. They were not armed people. They were peaceful citizens living in their houses in that colony and going out for their normal daily work. I talked to many of them. There was no question of violence. Angry and uspset they may be, but they did not indulge in any violence. So, I feel that the action of the police will have to be seen by the Judicial Commission against that background also. I tried to find out as to who ordered the fire. The firing was done by the Special Reserve Police, the SRP. They were very much in evidence when I went there. But the only officer whose identity I could establish as having been there when the firing was started, was some Inspector, Kadam. No senior police officer appears to have been there. They arrived in later on, but at the time of firing, there was nobody. Whether Mr. Kadam who was there had actually ordered the firing or not, I was not able to establish. There are different versions given to it.

As far as the Police Manual goes-there is a Police Manual-it has a well-defined, prescribed procedure, laid down in black and white, as to the methods which could be used to disperse a crowd. It is a question of dispersing a crowed. Well, many Members had referred to the various methods, short of firing, that are available there. In this particular case none of them was used--neither lathi charging nor tear-gassing nor use of water-cannons nor something else. Firing was resorted to. The Manual also prescribes that you don't start off by firing. First of all, you are supposed to fire one blank shot in the air. It is supposed to be a warning to the crowd. If they do not disperse after that blank shot, well, one shot can be fired and after a gap another short can be fired and so on. It is all laid down in the Manual. Mr. Vice-Chairman, you can study it if you like. But nothing of this kind happened. Suddenly firing began from one particular side and the people were taken by surprise. Many people who came out of their houses and were going out to other places were not even aware of the fact that the police, force was deployed and that it might take to firing. Anyway, the Commission will go into all these aspects. It is not my job to say to what extent the excesses were, whether the firing was unprovoked, who were responsible for that, etc. I am glad that a Judicial Commission has been appointed. I am also thankful to my colleague, the Railway Minister, who after going to Mumbai and discussing with the State Government people, was able to

persuade them to see that a sitting Judge, not a retired Judge, was appointed. He also saw to it that a time-limit was fixed for the Commission to complete its work. All that has already been agreed to. That is good as far as it goes.

As regards the question raised by Mr. Chavan as to why the garland of chappals and shoes was not removed from the statues and so on, I am not in a position to say anything exactly. We met some people there who claimed that they had tried to remove the garland of shoes. one is doctor who lives in that colony. He works there. I don't want to name him. He is a Dalit by the way. He was very helpful. He went around with us and explained many things to us. He said, when he came out of his house in the early morning and saw that this desecration had taken place, he got hold of some more people and he was trying to see to it that the garland of shoes was removed. But, according to him, some people were also not in favour of that and they were protesting and perhaps wanting—as Mr. Chavan has said—to show other people what has happened. I don't know.

Sir, I agree fully that whoever and whichever police personnel is found to be guilty of firing in this reckless, indiscriminate and unprovoked manner, should be identified and they have to be very severaly punished. I went to the hospital particularly to check up whether it was a fact that most of the bullet injuries were above the waist. Well, not all but most of the patients whom we saw—the Home Secretary and some other people were with me—had injuries above their waists. I do not know whether it was done as a deliberate intention to kill them. Let the judicial inquiry go into that and find out what the orders or the instructions given to the Police were. It is, of course, quite a shocking thing. So, this is as far as the firing goes.

So far as the oil tankers are concerned, I found that this is also locally a subject of controversy as to whether these tankers, two of them, were really loaded with some petroleum products or whether they were empty. Somebody said that no loaded tankers come and stand or are parked just here, next to this area, and that they are taken to some distant place about two kilometres away, and are loaded, and all the tankers which come and stand here are empty tankers. I don't know. It was not possible to check at that moment. They will have to find it out because the story of the Police is mainly based on this that they were afraid that if the tankers were loaded with petroleum products, which were highly inflammable, and if somebody had tried to set fire to one of the tankers, then the flames would have spread and three would have been widespread destruction and, therefore, they had to fire. Well, the judicial inquiry will go into all this, I hope, and I am sure they will.

I may say one thing that you won't find a single person anywhere, except the Police, who could justify this firing. I met so many people of different kinds. Nobody justifies it because the crowd there was perfectly peaceful and it never indulged in any violence. Nobody made any allegations that they had thrown stones at the Police, which is the usual explanation that is given to justify firing. So, these people, whoever they are, will have to be punished, very severely punished. In my opinion this was a crime, a very cold-blooded crime, committed by the Police. The other incident which is also a crime—there is no doubt about it—is the attack on Mr. Chhagan Bhujbal's house which is in a highly protected area, just in front of the Mantralaya where normally nobody is allowed to come. Certainly, no procession or meeting can take place there in that area. It is all very heavily guarded, under section 37 or 39 of the Bombay Police Act. Moreever, it was a Sunday morning when normally that area is practically deserted. Nobody goes there because there are only those Government office buildings which are all closed on a Sunday; normal-

ly nobody goes there. So, nobody has justified this attack on the houses of these leaders. A roundabout—in my opinion, this is my own opinion, I am giving it for whatever it is worth—indirect justification to this incident—I thought it that way—was given by the supreme commander of the Shiv Sena, Shri Bal Thackeray when he met me. He said, perhaps these boys had got angry and excited because of very provocative and insulting kind of speeches and remarks which had been made by Shri Chhagan Bhujbal in his capacity as Leader of the Council, he has been speaking and attacking the Government, attacking leaders of the Government in a very vulgar language, very provocative language. So, that is perhaps what has infuriated the Shiv Sainiks who had gone there. So, I take it as a kind of indirect *alibi* being given, that because of these provocative speeches of Mr. Bhujbal, some people perhaps got excited and did this.

Apart from this, somebody has been objecting saying why I should at all have a meeting with an extra-constitutional authority. I will come to that later on. I had a definite purpose and I think that purpose was quite justified. After all, here also it is being alleged that he is the man who runs that Government by remote control. If he is the remote control, then what is the use of meeting only with people who are being controlled by him? It is better to meet the controller himself. Anyway, he made this remark. Otherwise, he was quite regretful about it. I don't think it is possible for anybody to justify it, and he also said to me. Earlier in the morning, he had also come and met the Governor. The Governor had also told me what had transpired. The Governor is very much a constitutional authority and he had also told Mr. Thackeray certain things which are there in writing, contained in a letter of the Governor, which I need not read out here. He told Mr. Thackeray the same thing, that you have to unconditionally and unreservedly condemn what has happened. You have to give a guarantee or at least an assurance that you will not permit your people to indulge in this kind of action again, and so on. Mr. Thackeray said the same thing to the Governor as he said more or less to me later on. A question has been raised why you accept this assurance. I don't accept any assurance. I never said that I accepted it. I said this is an assurance he gave. I was very much determined to get this assurance from him. Something may happen again. These gentlemen here from the Congress Party, I am sure, the way they are speaking, would say, "Yes, there is no value in these assurances. Anything can happen again." So, I told Mr. Thackeray that everything would depend on how you and your people behave. What will happen in future depends on how you behave. The responsibility is on you. So, if he gives an assurance that I will not allow such things to happen again and yet if it is repeated, well, he will certainly be at a disadvantage. And if the Government wants to take action, certainly, this assurance given by him will be of some help to us.

So, anyway, I went to Mr. Bhujbal's house and I must say that it was absolutely, thoroughly, hundred per cent, ransacked, not just a kind of minor sort of damage was inflicted on the house. It was absolutely smashed up, beyond all repair. According to the Governor, that is his estimate, he said, "If they had caught hold of Mr. Bhujbal, —— —— they were not able to catch him inside the house —— I am not doubting my mind, they would have lynched him."

Well, I am not going that far because I do not know whether they were really out to kill him or not. But, they were shouting slogans, which I do not need to repeat here, including making references to him as a *gaddar*. Why should they call him a *gaddar*? What *gaddari* had he done? So, there was some meaning in it. As far as I could make out, they were

very angry with him and calling him *gaddar* because earlier he had been a very eminent, prominent member of the Shiv Sena. There is no doubt about it. Everybody knows it. Mr. Bhujbal has written a letter to me in which he says, "I was a member of the Shiv Sena. I worked for the Shiv Sena until they came in opposition to the Mandal Commission Report and its recommendations. Then I decided to break with them because I am a supporter of Mandal philosophy. I am a backward caste man myself and I fight for the interests of the backward castes. When I found that these people are opposing this Mandal, .." this what he has written, ... "I decided to come out from the Shiv Sena. I broke with them. Then I came and ultimately joined the Congress." I would not be surprised if Shiv Sena people are angry with him because of this. Now, as Leader of the Opposition in the Council, he is free to attack the Government. He is doing it with vengeance. That will be the only logical explanation for calling him a *gaddar.* So, I think, that the attack that was made on his house, as claimed by some people, was purely spontaneous, this story is a bit difficult to swallow because suddenly in that area, a deserted area, the area of Mantralaya, on Sunday morning, this crowd gathered without any previous preparation or without anybody having given any instructions or without anybody having instigated them is rather difficult to believe. It is a bit difficult to believe. Some prominent people were there. Some of the names have been given here. They were not just rank and file volunteers of the Shiv Sena. They were prominent people including Coporators, MLAs, Chairmen of Housing Boards and other such type of people. I must say that this was not denied. This was not denied. So, they came there. And the previous night, Mr. Bhujbal had got some information, I do not know from where, he was apprehending that there was likely to be an attack on his house. He informed the police immediately and reinforcement was sent to his house, altogether 40 or 50 policemen, including constables, one Sub-Inspector, one Assistant Sub-Inspector, some women police, and so on. They were rushed to his house. They were on duty to guard his house. The next morning when this crowd came and started to break open the doors to enter his house, this police force was found to be completely ineffective. They say that they did not try to physically stop the people from entering the house because there could have been some kind of a clash between the police and the demonstrators. But, there was nothing like that. They were just requesting them to go away and not to do this and so on. But, nothing had happened. Then two of them have been suspended by the Maharashtra Government itself for failing in their duties. So, Sir, I found a majority of the ordinary people who are not members of any political party are very much worried over this particular incident because people say that if the leaders of the Opposition in the Council and the Assembly can be treated like this, then what is going to be the fate of an ordinary citizen, a common man? How will he have safety and protection and how will he survive? So many people were raising this question. Now these people have been arrested. They are 46 or 47 whatever the number.

They all have to be prosecuted. But, Section 307 of the IPC has not been applied. Attempt to murder, under Section 307, has not been mentioned in the FIR. There are many other Sections. In fact, after studyingt that FIR, I came back and wrote a letter to the Chief Minister, Shri Manohar Joshi, pointing out this to him. I wrote that this is very wrong. Section 307 should be added to the list of Sections under which these people should be prosecuted. He has given an explanation that according to the police, according to the Police Commissioner, up to that stage the provisions

of Section 307 had not been attracted and, therefore, it had not been applied. As somebody had mentioned here earlier, Mr. Thackeray had advised these people to go to the *thana* and get themselves registered under Section 307. They went to the Police Commissioner. The Police Commissioner said, "You need not have come because Section 307 is not attracted at the moment, later on if some more evidence comes to light, we will consider about applying it". I had met the Police Commissioner, the DG, and some senior officers, including the Chief Secretary also. We had a lot of discussion. But, this is how the matter stands. I do not know how effectively these people, who had committed such a heinous offence of physically ransacking the houses of the two leaders, will be prosecuted or punished. But, they should be. There is no doubt about it.

Then, Sir, there is a complaint, which, I think, I should briefly refer to, though Mr. Bhujbal is not here in the House. Mr. Bhujbal has taken an offence and some Congress leaders here, by means of a statement, have also taken an offence. I am alleged to have made a statement which has been published in some of the Marathi newspapers. It says, which is not exactly the same, but in different words, that the Home Minister thinks that Mr. Bhujbal has got some connections with the criminals of the underworld. I did not exactly say that at all. Rather it was something said to me by Mr. Thackeray. I regret to say that the Bombay underworld is now dominated by a number of *mafia* dons who are operating their gangs. There are very well-organised gangs. A kind of gang-war goes on in Bombay in which these gangs are sometimes killing each other and sometimes they are attacking the people from whom they can get large sums of money. A number of murders have taken place in Bombay, including of some prominent industrialists, one very leading trade union leader and so on. I do not want to go into all that . But, these gangs have become very powerful in Bombay. And to my mind, the police also are pressurized to a large extent by the presence and activities of these gangs. They are not in a position to easily act against them. I was told that one very senior police officer had been frequently going and meeting Mr. Thackeray during the time of the 1992 riots. You remember the riots of 1992 which took place after the Babri Masjid was demolished. The whole of Bombay was practically burning. Terrible things happened there. I got a report about that officer that he was paying frequent visits to Mr. Thackeray. He is not in Bombay now. He has been shifted out. I asked that officer here was a report against him and if he had anything to say. He said: 'Sir, If I, as a police officer working in the city of Bombay, am called by the Shiv Sena chief, is it possible for me to refuse? If the Shiv Sena chief sends a message saying that he wants to see me, is it possible for me to refuse; is it possible for me not to go?'. If Mr. Thackeray is an extra-constitutional authority, according to people on the floor of the House, he is an extra-constitutional authority there also. This police officer said: 'If he sends for me, I have no option; I must go; but it does not mean that I will do whatever he orders me to do'. He said: 'I have never done that; sometimes, we were asked to transfer some officers, this and that, but I have never done that'. He said: 'I have never done that, but I had to go; it is not possible to work in Bombay and not go when we are summoned by Mr. Bal Thackeray'. This is what he said.

Reference was also made to that daily which is edited by the Shiv Sena chief. I am only saying this because there is a coalition Government there. It is not only the Shiv Sena. It is the Shiv Sena, in partnership with the BJP. I am sure, in that context, whatever the Shiv Sena says or does or writes or declares must be highly embarrassing for the BJP also. It is for the BJP to decide. It is for the BJP to

decide whether they want to identify themselves with everything that the Shiv Sena does—whatever statements it issues, whatever it proclaims, these incidents which have taken place, i.e. attacking the houses of Opposition leaders, and all that. I get the impression that the BJP people are embarrased. They cannot justify it also. They were also criticising and condemning these things. I think some of these actions were highly embarrassing for them also because they are in the same Government. They are sitting together in the same Government.

I agree with all those Members because, after all, we are in active politics. We know what is the ideology, what is the philosophy, of these various parties and their leaders. I have no doubt in my mind that the Government in Maharashtra, today, is anti-secular. Of course, it is an elected Government. I cannot say anything against it like that. It has not dropped from the heavens. it has been elected by the people, even though it may not have got an absolute majority; but it has been elected. People wanted such a Government. But it is a Government whose philosophy, basic philosophy, is anti-secular. It is an anti-secular Government. It is not in favour of the rights of the minorities and it is not in favour, therefore, of the rights of the Dalits also and to their making progress.

Therefore, this situation is very unfortunate because the Shiv Sena is being challenged now in Mumbai by some other force. I should not mention the name. Everybody knows. Anybody who lives in Mumbai knows. Everybody who lives in Mumbai knows that some other people who themselves are linked with the underworld are challenging the Shiv Sena openly. For what purpose, I do not know. But they are challenging the Shiv Sena. They are organising *morchas*. They are collecting money. They are setting up their organisations in different localities of Mumbai. Therefore, this conflict of rivalry— if you would like to call it that way— between the Shiv Sena and this other gentleman is also becoming a factor, whatever others may say. People want patronage also because elections would come sooner or later. Political patronage becomes important.

Sir, I want to say one thing here. Nowadays, we read in the newspapers often. Figures and statistics are given—whether they are genuine, I do not know—that in the State Assembly of such and such State— Bihar or U.P. or some other State—even in parliament, there are so many people sitting there now who are historysheeters. it is published. Figures are published. District by district, figures are given of people against whom a number of police cases are pending; of everything, ranging from kidnapping to robbery, to rape, and all kind of things; but many of them have become MLAs., MPs., and some even Ministers. If we think that we are going to be ...*(Interruptions)*

श्री नरेश यादव: माननीय गृह मंत्री जी ने बिहार की बात की है। मैं दूसरे हाऊस की बात तो नहीं करता लेकिन इस हाउस में बिहार के कितने मेंबर्स हिस्ट्री-शीटर्स हैं, यह मैं उनसे जानना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): बाद में अलग से पूछ लीजिएगा...**(व्यवधान)**

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: मैं भी एक बात जानना चाहता हूं कि क्या यह सच है कि माननीय गृह मंत्री जी के सहायक राज्य मंत्री भी हिस्ट्री-शीटर रहे हैं?

श्री इंद्रजीत गुप्त: ऑनरेबल मेंबर्स को ऐसा नहीं बोलना चाहिए और ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि उन्हें ही यह तीर मारा जा रहा है। ऐसा सोचने की कोई जरूरत नहीं है। मैंने तो एक जनरल बात कही है। यह छप चुका है कितनी ही पत्रिकाओं में, मैगजींस में। मैंने यह भी कहा है कि यह गलत भी हो सकता है। मैं यह कह रहा हूं कि आज देश के अंदर तेजी के साथ अपराध बढ़ रहा है, क्राईम बढ़ रहा है, करप्शन बढ़ रहा है, इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन हम सिर्फ पुलिस और कानून के ऊपर निर्भर रहकर देश को बचा सकेंगे, मैं ऐसा नहीं समझता हूं। इसके लिए लोगों को, जनता को जागरूक करना पड़ेगा, खड़ा करना पड़ेगा इसके खिलाफ।

महोदय, मैं यह कह रहा हूं कि हर पोलिटिकल पार्टी, किसी पार्टी को छोड़ने के लिए मैं तैयार नहीं हूं, मेरी अपनी पार्टी भी उसमें शामिल है, हर पार्टी के नेताओं का क्या यह कर्तव्य नहीं है कि वह जनता के सामने खड़े होकर खुलेआम कम से कम यह बोले कि अगले चुनाव में, अगला इलेक्शन जब होगा तो हम अपनी पार्टी से किसी ऐसे व्यक्ति को उम्मीदवार नहीं बनाएंगे जो अपराध के साथ जुड़ा हो। फिर पब्लिक विचार करेगी कि किसको आपने टिकट दिया है या नहीं दिया है। देखिए लोग बहुत बुद्धिमान हैं आजकल, सब जानते हैं। हर गांव में, हर शहर में, हर मोहल्ले में वहां की जनता जानती है, पहचानती है कि वे कौन लोग हैं जिन्होंने काला धन इकट्ठा किया है, जो माफिया के गैंग तैयार करके उनको हथियार देते हैं, जो लोगों पर दबाव डालते हैं, उनको डराते हैं, लालच देते हैं। लेकिन अकेले किसी व्यक्ति का उनके खिलाफ लड़ना संभव नहीं है। वह मुंह खोलकर इनके खिलाफ बोले, खुल्लमखुल्ला बोले, यह संभव नहीं है। उसकी तो जान चली जाएगी। क्या हो रहा है आजकल रोज-रोज? उसकी तो जान चली जाएगी।

महोदय, मैं कोई विशेष पार्टी या दल या मेंबर के खिलाफ नहीं बोल रहा हूं। हम दो हफ्ते बाद ही अपनी इंडिपेंडेंस की गोल्डन जुबली मनाने जा रहे हैं। यह खुशी का दिन है, गौरव का दिन है लेकिन हमें सोचना चाहिए कि इस देश को, समाज को हमने इन 50 बरसों में कहां पहुंचा दिया है। इसको हमें कैसे बचाना है, इस पर हमें सोचना चाहिए।

महोदय, मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं वरना मैं दूसरे हाऊस में मुश्किल में पड़ जाऊंगा और मुझे उस हाऊस में भी डांट पड़ेगी। मैं यह कहना चाहता हूं कि बंबई की यह घटना बहुत दर्दनाक है, बहुत शर्मनाक है। इस पर उचित कार्यवाही जरूर होनी चाहिए लेकिन मैं यह नहीं सोचता हूं कि अभी नौबत ऐसी आ गई है, भविष्य में क्या होगा यह मैं नहीं जानता, लेकिन अभी मुझे नहीं लगता कि वहां धारा 356 लगाने की आवश्यकता है। ताली बजाने की क्या बात है? कल आ जाएगी ऐसी हालत। हमारी इंटर स्टेट काऊंसिल में आपकी भी पार्टी के मुख्यमंत्री लोग मेंबर है और सबने कहा है कि हम नहीं चाहते हैं कि 356 को कांस्टीट्यूशन से निकाल दिया जाए। कोई नहीं कहता पंजाब के मुख्य मंत्री के अलावा। वह भी आपकी पार्टी के साथ एक कॉयलेशन गवर्नमेंट चला रहे हैं पंजाब में। जो कुछ भी हो उनका अधिकार है अपनी राय बोलने का। बाकी सभी लोगों ने कहा कि आर्टिकल 356 को अभी रखना चाहिए। लेकिन उसका जो दुरुपयोग हुआ है, कम से कम एक सौ बार हुआ है, जो-जो लोग केन्द्रीय सरकार में बैठे हैं किसी भी पार्टी के, जब-जब आए तो इसको इस्तेमाल किया अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए, अपने स्वार्थ के लिए, ऐसी चुनी हुई सरकारों को गिराने के लिए उनके राजनीतिक मतभेद थे। तो इसको रखा जाए लेकिन इसके लिए हमको कुछ ऐसे सेफगार्ड, कुछ कंडीशंस, शर्त लगानी पड़ेंगी ताकि इसका दुरुपयोग न हो सके। कम से कम उसको घटा दिया जाए। वही हमारे यहां बहस चल रही है उस इंटरस्टेट कौंसिल पर। वह बहुत पहले भी हो सकती थी लेकिन इंटरस्टेट कौंसिल एक कांस्टीट्यूशनल बॉडी है आर्टिकल 263 में। यह उसकी मीटिंग ही कभी नहीं बुलाते थे, उसको फंक्शन नहीं करने दिया। हमारी सरकार ने उसको फिर जीवित किया है, चालू किया है और वहां लोग दिलचस्पी के साथ और चीफ मिनिस्टर इसके बारे में अभी बहस कर रहे हैं कि आर्टिकल 356 अगर रहे तो किस ढंग से उसको कंट्रोल किया जाए। अभी तक हम एक राय पर नहीं पहुंच सके हैं। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आगे चल करके कोई रास्ता निकल सकता है। तो मैं नहीं सोचता हूं कि कांग्रेस पार्टी के मित्रों की जो विवशता है वह चाहते हैं कि जल्द से जल्द इस सरकार को गद्दी से हटा दिया जाए, यह तो समझना स्वाभाविक है कोई मुश्किल नहीं है समझने में। वैसे ही हमारे बी०जे०पी० के और शिव सेना के लोग भी यही चाहते हैं कि कोई ढंग से हमारी सरकार बचे और कोई दोष हुआ हो या नहीं हुआ हो तो उसको ढांक कर रखें। स्वाभाविक है यह तो पौलिटिक्स है, यह तो पौलिटिक्स चीज है। लेकिन मैं कहना चाहता हूं हमारे छगन भुजबल साहब को कि वह अखबार पढ़ें। यहां पर मैंने हाऊस में कहा कि मैंने यह कभी नहीं कहा कि वह अंडर वर्ल्ड के कोई खास माफिया या ऐसे लोगों से मिले हुए हैं। लेकिन उन्होंने अपनी बात स्वीकार की कि शिव सेना में थे। आज अगर वह कहते हैं कि वह एंटी सोशल एक्टिविटीज कर रहे हैं, कुछ गुंडागर्दी के साथ वह भी मिले हुए हैं तो उस वक्त भी थे। जब भुजबल साहब उसमें थे तब तो वह तुलसी पत्ता के दूध से धुले हुए नहीं थे। अब वह इधर आ गए और कांग्रेस में जुट गए और कुछ माफिया लोग हैं जो आज शिव सेना के खिलाफ खड़े हो रहे हैं। अगर उनके साथ उनकी कुछ दोस्ती हो जाए तो कुछ ताज्जुब की बात नहीं है। मैंने कुछ नहीं कहा है सिर्फ इतना ही कहा है। अगर मैंने

कहा है तो मैं माफी मांगने के लिए तैयार हूं। सर, मैं आशा करता हूं कि जो जुडिशियल कमीशन बैठाया गया है पुलिस फायरंग के लिए उसकी रिपोर्ट जल्दी से जल्दी आ जाए, एक टाईम की पाबंदी लगाई गई है। जहां तक जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया है दो लीडरों के मकानों के ऊपर हमला करने के कारण, उनको गिरफ्तार करके सजा दी जाए। प्रसीक्यूशन तो होगा ही। जो उचित सैक्शन है आई०पी०सी० के उसके मुताबिक उनके ऊपर विचार होना चाहिए और सजा देनी चाहिए। मैं चाहता हूं कि अभी हमारे तमाम लोग जिनका सिलसिला है इन वाक्यात के साथ वह भी कुछ सबक सीखेंगे। यह मामला ऐसा नहीं है। मैं समझता हूं कि आज हमारे देश में बड़ा गंभीर संकट पैदा हो रहा है इस बढ़ते हुए अपराध और भ्रष्टाचार के कारण और हमें लोगों को एक साथ मिलकर, कुछ हमको अपने दिमाग को एक साथ लगाकर सिरिअसली कोशिश करनी चाहिए कि कैसे हम इस देश को बचा सकेंगे इस संकट से। आसान काम नहीं है, लेकिन अगर हम नहीं कोशिश करें तो देश की क्या हालत होगी कुछ दिनों बाद बोलना बहुत मुश्किल होगा। इतना ही आप से कहना है। मैं आप का बहुत-बहुत आभारी हूं। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): गृह मंत्री जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने विस्तृत रूप से सब मुद्दों के संबंध में रोशनी डाली। ऑनरेबल मैंबर्स ...(व्यवधान)...

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिंदे: मैं इसमें अब कुछ भी नहीं पूछना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप वैसे भी थके हुए हैं।

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिंदे: मैं आभारी हूं। The hon. Home Minister is very honest; he has very honestly put forth his case. Whatever facts I have produced before this House, he has exactly corroborated them. Thereby I am thankful to him.

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): आप लोगों की भावनाओं का आदर करते हुए यहां आधे घंटे के बाद सदन चार बजे मिलेगा और उसके उपरांत अगला मामला लिया जाएगा। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

The House then adjourned at twenty-six minutes past three of the clock.

The House re-assembled at four minutes past four of the clock,

[THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE) in the Chair.]

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Short duration discussion regarding the prevailing situation in Bihar. ...*(Interruptions)*...

श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान): मैडम, सुबह से बैठे हैं, थक गए हैं। आप कम से कम कुछ ऐसी राहत दीजिए कि यह विषय कल किसी समय पर लिया जाए।...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): अग्रवाल जी, आप तो थके हुए नजर नहीं आ रहे हैं। ...(व्यवधान)...

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): In Bihar, everything is over. What is the discussion now? ...*(Interruptions)*...

SHRI S.S. AHLUWALIA (Bihar): Tomorrow. ...*(Interruptions)*...

श्री रामदास अग्रवाल: यह बात ठीक है। ...(व्यवधान)... आप नहीं चाहते कि ...(व्यवधान)...बिहार की सिचुएशन पर डिसकसन तो जरूर होना चाहिए। बिहार में केवल लालू जी की गिरफ्तारी ही महत्वपूर्ण नहीं है। ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Narayanasamy, one by one, please.

श्री सतीश अग्रवाल (राजस्थान): मैडम, जिस समय दो विषय छांटे गए थे—महाराष्ट्र में दलितों पर अत्याचार और बिहार की स्थिति पर चर्चा, उस समय एक प्रश्न यह आया था कि दोनों को एक दिन कर दिया जाए। एक विषय 12 से 4 और दूसरा 4 से 8 तक लिया जाए। विपक्ष के नेता महोदय का और बाकी सबका यह सुझाव था कि ज्यादा अच्छा होगा कि दोनों विषयों को अलग-अलग कर दिया जाए। इसलिए तय हुआ कि एक विषय सोमवार को लेंगे और एक विषय मंगलवार को लेंगे। अब महाराष्ट्र की डिबेट पूरी हो चुकी है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन यह है कि इस संदर्भ में क्योंकि बिहार की डिबेट अलग से होनी थी और वह

मंगल को नहीं हो सकी तो उसका कल जीरो आवर के बाद या 2 बजे यक 2.30 बजे जो भी समय हो, प्रारंभ कर देंगे और शाम तब उसको खत्म कर देंगे। वैसे भी यह विषय आज शाम तक समाप्त नहीं हो सकता।

श्री सुरिन्दर कुमार सिंगला (पंजाब): मैं कहना चाहता हूं कि सतीश जी की बात सही है कि इसे कल तक के लिए पोस्ट-पोन कर दें। आज सारे दिन काम ज्यादा हुआ है और मेंबरों ने लंच भी नहीं खाया है...

श्री एस०एस० अहलुवालिया: आज छुट्टी कर दी जाए।

श्री सुरिन्दर कुमार सिंगला: आज छुट्टी कर दी जाए क्योंकि लंच भी नहीं हुआ है। हम लोग लंच में भी यहां बैठे रहे हैं।

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, we sat throughout the day today and discussed the Maharashtra issue. Let the Bihar issue be taken up tomorrow. We do not know as to how long the Bihar issue is going to take. So, we will take it up tomarrow.

SHRI V.P. DURAISAMY (Tamil Nadu): Madam, the issue before the House is about corruption at all levels irrespective of the status of a person. Now, after the denial of bail order by the Supreme Court to Laloo Prasad Ji, he has stepped down. It is for the courts now to decide whether he is involved in corruption or not, whether he is an innocent person or not. So, what is the use in sparing more time to have discussion on this issue after he surrendered before the Designated Court?

श्री नरेश यादव (बिहार): मैडम, मैं चेयर के प्रति पूरा सम्मान प्रकट करते हुए यह कहना चाहता हूं कि जो चेयर का ओदश होगा, वह सदन को मान्य होगा। मैं एक रेक्वेस्ट करना चाहता हूं कि जैसे कि इसके पहले महाराष्ट्र पर शार्ट ड्यूरेशन डिसकशन एक्सेप्ट हुआ था, उसमें बताया गया था कि वहां दलितों पर अत्याचार हुए हैं, उस पर चर्चा करने के लिए यह चर्चा थी। लेकिन बिहार के बारे में जो एक्सेप्ट हुआ है उसमें सिर्फ इतना ही लिखा गया है कि प्रिवेलिंग सिचुएशन इन बिहार। मैंने सचिवालय से भी पूछा कि अब क्या सिचुएशन है तो सचिवालय ने भी कोई जानकारी मुझे नहीं दी। सिर्फ इतना कहा कि इसमें ये बातें दी गई हैं। हमारा यह कहना है कि अब एक नई सरकार वहां आ गई है और दो दिन पहले उस सरकार ने कांफिडेंस वोट प्राप्त किया है। उसके बाद बिहार में कोई ऐसी घटना भी नहीं घटी है, वहां ला एंड आर्डर ब्रेक नहीं हुआ है जिसके आधार पर कोई चर्चा सदन में लाई जाए। इसलिए हमारा कहना है कि इस चर्चा की सदन में आवश्यकता ही नहीं है। बिहार में कोई ऐसी घटना नहीं घटी है जिससे चर्चा सदन में लाई जाए।

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal): Madam, all of us know that this is a very short Session. Yesterday, there were a lot of feelings in the House that because of the absence of the Home Minister or the Minister of State for Home, we could not work almost for the day. Now, the discussion that has been allowed, I am given to undertand is a full discussion, and the issue is not only constitutional but there are other larget issues. I think the note with which the Home Minister has concluded his earlier dicussion, many of the issues that arise out of that discussion, are also relevant in Bihar. This opportunity to introspect what were are going to do about our democracy arises out of the situation in Bihar which has great relevance for this august House. So, I think it will be wrong on our part to conclude that there should not be any discussion. Now, if there is a discussion, what kind of signal do we send to our countrymen? The question comes up that we are wasting the nation's money by not having any business. Yesterday. we could not work. So, if we have to have a discussion, why not start it right now?

श्री जलालुदीन अंसारी (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदया, बिहार पर जो बहस के लिए स्वीकृति दी गई है वहां जो स्थिति है वह अब भी बरकरार है और इस पर अवश्य विचार होना चाहिए। यह कह देना कि मुख्य मंत्री ने इस्तीफा दे दिया है और वे जेल चले गए हैं इसलिए इस पर बहस नहीं होनी चाहिए क्योंकि मामला बदल गया है यह ठीक नहीं है। लेकिन महोदया, यह तो बिल्कुल तय है कि इस पर आपको बहस कराना ही है और इस पर बहस होनी चाहिए ताकि किस प्रकार की

परिस्थितियां वहां पर बन रही हैं, कौन सी नयी बात वहां आ रही है यह हमें पता चल सके। यह पूरे देश और संसदीय लोकतंत्र के लिए एक चिन्ता का विषय है। जब इस पर बहस होगी तो विभिन्न दलों के जो सारे प्रबुद्ध वक्ता हैं वे बतायेंगे कि वहां कि नयी संस्कृति और नयी परम्परा को जन्म दिया जा रहा है जो लोकतंत्र के लिए, संसदीय जनतंत्र के लिए बहुत ही घातक भविष्य में हो सकता है। इस बहस के लिए आपकी स्वीकृति मिल चुकी है इसलिए इस पर बहस होनी चाहिए हम यही मांग आपसे करते हैं।

†[شری جلال الدین انصاری "بہار":

آپ سبھا ادھیکش مہودے - بہار پر بحث کیلئے جو منظوری دی ہے یہ جو استعفیٰ ہے وہ اب بھی برقرار ہے اور اس پر فوری وچار ہونا چاہئے - یہ کہہ دینا کہ مکھیہ منتری نے استعفیٰ دے دیا اور وہ جیل چلے گئے ہیں اس لئے اس پر بحث نہیں ہونی چاہئے کیونکہ معاملہ بدل گیا ہے یہ ٹھیک نہیں ہے - لیکن مہودیہ یہ تو بالکل صاف ہے کہ اس پر آپکو بحث کرانا ہی ہے اور اس پر بحث ہونی چاہئے - تاکہ کس طرح کے حالات وہاں پر بن رہے ہیں - کون سی نئی بات وہاں آ رہی ہے - یہ ہمیں پتہ چل سکے یہ پورے دیش اور سنسدیہ لوک تنتر کیلئے ایک چنتا کا وشے ہے - جب اس پر بحث ہوگی تو مختلف دلوں کے جو سارے پربدھ وکتا ہیں وہ بتائیں گے کہ وہاں کس نئی سنسکرتی اور نئی پرمپرا کو جنم دیا جا رہا ہے جو لوک تنتر کیلئے سنسدیہ جن تنتر کیلئے بہت ہی گھاتک بھوشیہ میں ہو سکتا ہے - اس بحث کیلئے آپکی منظوری مل چکی ہے - اس لئے اس پر بحث ہونی چاہئے - ہم یہی مانگ آپ سے کرتے ہیں]†

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात): उप-सभाध्यक्ष महोदया, बिहार पर बहस आज हो, कल हो, कभी हो, इस पर मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन मेरा कहना यह है कि दो तीन दिन से जो महत्वपूर्ण स्पेशल मेंशन हैं, वह स्पिल-ओवर होते जा रहे हैं। मेरा कहना यह है कि मान लीजिये कि कल आप बिहार की बहस को ले लेते हैं तो सब से पहले स्पेशल मेंशन हो जाने चाहियें और उसके बाद बिहार की चर्चा शुरू होनी चाहिये। तीन-चार दिन से हर रोज़ स्पेशल मेंशन पेंडिंग चलते आ रहे हैं। तो कल पहले स्पेशल मेंशन खत्म हो जाएं और उसके बाद बिहार के बारे में चर्चा चले। धन्यवाद।

श्री सतीश अग्रवाल: मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

श्री एस० एस० अहलुवालिया: महोदया, पता नहीं हमारे साथी नीलोत्पल बसु और जलालुदीन अंसारी जी को ऐसा क्यों इम्प्रेशन हो गया कि बिहार की चर्चा हम नहीं करना चाहते हैं। (व्यवधान) उसके कनक्लूज़न पर मत आइये। इस चर्चा को करने के लिए हम लोगों ने, सब ने आवाज़ उठाई थी। दो दिन से सदन में काम नहीं हो सका। यह मांग करते रहे कि बिहार पर पहले बहस हो या दलितों पर पहले बहस हो अंततः यह फैसला हुआ कि दलितों के मामले को पहले लिया जाए और उसके बाद बिहार को। चूंकि कल और आज तनावपूर्ण स्थिति रही पूरे सदन में, हम लोग चाहेंगे कि बिहार पर जो संवैधानिक और उससे जुड़ी हुई चर्चा है, वह सिर्फ हल्ले-गुल्ले की चर्चा न हो पर एक सटीक चर्चा हो जो देश को मार्ग दर्शन दे सके और हमारे शासनतंत्र को मार्ग दर्शन दे सके और अच्छे सुझाव आ सकें, जो प्रोब्लम है लोग उसे हाईलाइट कर सकें। मैं समझता हूं कि जैसी श्री सतीश अग्रवाल जी ने निवेदन किया है, सदन में प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन

करता हूं कि कल इस पर चर्चा की जाए, कल का समय निश्चित कर दिया जाए, कल पूरी चर्चा की जाए, जितनी देर तक चर्चा चले, हम चलाएं और सरकार से जानने की कोशिश करें कि बिहार के बारे में वह क्या निर्णय ले रही है, वहां के शासनतंत्र को कैसे विधिवत् चलाया जा सकता है, इसके बारे में निर्देश दे दें।

SHRI K. M. SAIFULLAH (Andhra Pradesh): Madam, let us not politicise the issue regarding the Bihar affair. As far as law is concerned, the man is charge-sheeted, he has resigned and with due respect to the court and the judiciary he has surrendered before the court. The court will take due course of action. What is the use of politicising the issue? If it is only filing the charge-sheet, it means that *prima facie* evidence is available against the accused. It doesn't mean his disqualification. In politics all political people do not resign. Some people resign on moral grounds. Constitutionally he is not bound to resign. But anyhow he has resigned and surrendered before the court and the court will follow the laws. Some of the Union Ministers like Shri Shiv Shanker and others are charge-sheeted. The court held that there was no *prima-facie* case and they were discharged. So, the court will take action and the judiciary will take care of it. No inquiry or any such thing is necessary in the House.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): आदरणीया उपसभाध्यक्ष महोदया, हमारे बहुत से मित्रों ने कहा कि चूंकि बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री ने आज आत्म-समर्पण कर दिया है, इसलिए इस पर विचार न हो। मेरा विश्वास है कि विचार के विषय और गहरे हैं। कोई मुख्य मंत्री रहे न रहे, कोई पूर्व मुख्य मंत्री आत्म-समर्पण कर दे, इतनी ही मांग नहीं थी। राजनीति जिस स्तर पर उतर रही है, भ्रष्टाचार का जो विकराल स्वरूप आया है, उसके पीछे के जो आधार हैं जो नैतिकता लोकतंत्र को धुरी के रूप में धारण करती है, उस नैतिकता का क्या हुआ, उसका कौन सा स्वरूप आज बिहार में प्रदर्शित हो रहा है, इन सब पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता है। आशंका है कि अगर हम इस प्रकार की चर्चा को प्राथमिकता नहीं देंगे तो कल दूसरे प्रदेश भी बिहार की ओर जा सकते है। बिहार की जो भयावह आशंकाएं हैं, उनको रेखांकित करने के लिए आज की स्थिति में बिहार पर विचार करना बहुत ही संगत है। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि बिहार पर अवश्य विचार किया जाए। यह ठीक है कि उसको हम कल करें। आज समय का उपयोग करना चाहें तो स्पेशल मेंशन कर सकते हैं।

श्री रामदास अग्रवाल: महोदया, जहां तक बिहार के विषय पर संसद में चर्चा करने का प्रश्न है उस पर चर्चा निश्चित ही होनी चाहिए। जैसा कि और सभी बंधुओं ने भी कहा है कि यह गिरफ्तारी ही एक इश्यू नहीं था। उसके अंदर और भी बहुत सारी महत्वपूर्ण बातें हैं जिन पर सदन का और देश का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। इसलिए कल सदन में इसकी लुल-फ्लेज्ड चर्चा हो, यह मेरा निवेदन है और दूसरा आज समय का उपयोग करने के लिए आप उचित समझें तो हमारे जो स्पेशल मेन्शस वगैरह पेन्डिंग हैं आप उन पर कार्यवाही प्रारंभ करें।

श्री नरेश यादव: महोदया, बिहार पर चर्चा हो इसमें हमें भी कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन सरकार ने आज से दो दिन पहले विश्वास प्राप्त किया है, पुरानी सरकार चली गयी है, नयी सरकार आयी है इसलिए मैं यह कहता हूं कि कम से कम एक सप्ताह का समय ...(व्यवधान)... एक मिनट के लिए मुझे भी बोलने का हक है

...(व्यवधान)... नयी सरकार जो आयी है और जिनके लिए बिल ला रहे हैं 33 परसेंट का, एक महिला को वहां का मुख्य मंत्री बनाया गया है तो नयी सरकार को काम-काज का एक सप्ताह का समय दिया जाए और इसलिए इसे एक सप्ताह के लिए आगे कर दिया जाए। दूसरा मैं यह कहना चाहता हूं कि जो सवाल माननीय सदस्य उठा रहे हैं, कह रहे हैं वह समस्या अकेले बिहार की नहीं है। भ्रष्टाचार हो, अत्याचार हो, दलितों पर प्रहार हो यह समस्या सिर्फ अकेले बिहार की नहीं है यह पूरे देश की समस्या है और हम जरूर चाहते हैं कि इस पर व्यापक बहस हो, इस सदन में चर्चा होनी चाहिए, भ्रष्टाचार से समझौता कोई नहीं कर सकता है, अत्याचार से समझौता कोई नहीं कर सकता है, पूरे सदन में चर्चा होनी चाहिए लेकिन एक सप्ताह का समय देना चाहिए और बिहार के बारे में चर्चा करनी हो तो बिहार के बारे में करें, हम लोग तैयार हैं इसके लिए।

विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त): सदर साहिबा, मेरा ख्याल था कि मैं खामोश रहूंगा क्योंकि मैं बिल्कुल हिल गया हूं इस वक्त। मैं अपने जज्बात का

पूरे तरह से विश्लेषण भी नहीं कर पा रहा हूं। एक प्रदेश का मुख्य मंत्री आज गिरफ्तार हुआ है। मुख्य मंत्री सियासतदान था। उसका हम सियासी लोगों के कबीले से ताल्लुक था। हम मुख्य मंत्री के अब तक के रवैये से सख्ततरीन नाराज रहे हैं। लेकिन मैं ऐसा मानता हूं कि किसी को भी इससे खुशी नहीं हो सकती कि आज किसी एक प्रदेश का चीफ मिनिस्टर गिरफ्तार हुआ है। बिहार के मामलात बहुत सारी चीजों से जुड़े हुए हैं...

श्री नरेश यादवः मुख्य मंत्री गिरफ्तार नहीं हुए हैं। वे मुख्य मंत्री नहीं हैं। एक्स थे—पूर्व।

श्री सिकन्दर बख्तः भूतपूर्व हैं। मैं मानता हूं कि कल तक वह शख्स चीफ मिनिस्टर था, कल तक वह एक दल का मुखिया था...(**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): यादवजी, सिकन्दर बख्त साहब भूत नहीं लगाना चाहते हैं। पूर्व मुख्य मंत्री लगाना चाहते थे लेकिन उन्होंने मुख्य मंत्री कह दिया तो उसमें कोई बड़ी बात नहीं है।

श्री सिकन्दर बख्तः आपने जो टेक्निकल बातें बतायी हैं उनके बहुत चक्कर में मत पड़ा कीजिए। वह आदमी एक खास हैसियत हिंदुस्तान की सियासत में रखता था। सियासी लोगों को उस पर रंजीदा होना चाहिए। मैं हूं। मुझे कोई बहुत खुशी नहीं है। बिहार के मामलात का ताल्लुक दर्जनों चीजों से है। यहां तक कि लालू के रवैये से भी मैं बहुत नाखुश हूं। लेकिन आज मुझे कोई खुशी का मौका नजर नहीं आता कि किसी को इससे खुशी होनी चाहिए। तकलीफदेह मामला है। इसलिए बिहार पर कल बहस हो, सलीके से हो और इश्यूज पर हो। सियासी मुखालिफत की वजह से एक दूसरे के खिलाफ तलवारें न खिच जाएं और महज सियासी नाराजनी न हो। सलीके से बहस हो। बिहार पूरे हिंदुस्तान की सियासी जिंदगी के लिए एक जड़ बन गया है, बुनियाद बन गया है इस वक्त। कि हिन्दुस्तान को आखिर जाना किस तरफ है। बिहार बुनियाद बन गया है। तो मेरा कहना यह है कि आज के किस्से को छोड़ कर अपने-अपने घर जाएं और कल इस पर बात-चीत करें, सलीके से करें, कड़वाहटों को छोड़ कर करें। इतनी ही मेरी आपसे दरख्वास्त थी और कुछ नहीं था।

†[] [illegible] شری سکندر بخت: صدر صاحبہ - میرا خیال تھا کہ میں خاموش رہوں گا کیونکہ میں بالکل ہل گیا ہوں - اس وقت میں اپنے جذبات کا پوری طرح سے "وشلیشن" بھی نہیں کر پا رہا ہوں - ایک پردیش کا مکھیہ منتری آج گرفتار ہوا ہے - مکھیہ منتری سیاستدان تھا - اسکا ہم سیاسی لوگوں کے قبیلے سے تعلق تھا - ہم مکھیہ منتری کے اب تک کے رویّے سے سخت ترین ناراض رہے ہیں - لیکن میں ایسا مانتا ہوں کہ کسی کو بھی اس سے خوشی نہیں ہو سکتی کہ آج کسی ایک پردیش کا چیف منسٹر گرفتار ہوا ہے - بہار کے معاملات بہت ساری چیزوں سے جڑے ہوئے ہیں ...مداخلت...

شری نریش یادو: مکھیہ منتری گرفتار نہیں ہوئے ہیں - وہ مکھیہ منتری نہیں ہیں - ایکس تھے - پورو -

شری سکندر بخت: بھوت پوروہیں - میں مانتا ہوں کہ کل تک وہ شخص چیف منسٹر تھا - کل تک وہ ایک دل کا مکھیہ تھا ...مداخلت...

اپ سبھا ادھیکش کماری سروج کھاپرڈے: یادو جی سکندر صاحب بھوت نہیں لگانا چاہتے ہیں - پورو مکھیہ منتری

لگانا چاہئے تھے لیکن انہوں نے ملکیہ
منتری کہہ دیا تو کوئی بڑی بات نہیں ہے -
شری سکندر بخت: آپنے جو ٹیکنیکل
باتیں بتائی ہیں ان کے بہت چکر میں مت
پڑ جائیے - وہ آدمی ایک خاص حیثیت
ہندوستان کی سیاست میں رکھتا تھا -
سیاسی لوگوں کو اس پر رنجیدہ ہونا
چاہئے - میں ہوں - مجھے کوئی بہت خوشی
نہیں ہے - بہار کے معاملات کا تعلق
دو چیزوں سے ہے - یہاں تک کے لالو
کے رویہ سے بھی میں بہت ناخوش ہوں -
لیکن آج مجھے کوئی خوشی کا موقع نظر
نہیں آتا کہ کسی کو اس سے خوشی
ہونی چاہئے - تکلیف دہ معاملہ ہے -
اس لئے بہار پر کل بحث ہو - سلیقے
سے ہو اور ایشوز پر ہو - سیاسی
مخالفت کی وجہ سے ایک دوسرے کے
خلاف تلواریں نہ کھینچی جائیں اور
محض سیاسی نعرہ زنی نہ ہو - سلیقے
سے بحث ہو - بہار پورے ہندوستان
کی سیاسی زندگی کے لئے ایک جڑ بن
گیا ہے - بنیاد بن گیا ہے اس وقت کہ ہندوستان
کو آخر جانا کس طرف ہے - بہار بنیاد بن گیا
ہے - تو میرا کہنا ہے کہ آج کے قصے کو چھوڑ کر
اپنے اپنے گھر جائیں اور کل اس پر بات چیت
کریں - سلیقے سے کریں گروہ واحدوں کو چھوڑ کر
کریں - اتنی ہی میری آپ سے درخواست تھی
اور کچھ نہیں تھا -]

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मुझे ऐसा लगता है कि बिजनेस एडवाइज़री कमेटी ने जो निर्णय लिया था और आज के बिजनेस लिस्ट में शार्ट ड्यूरेशन डिसकशन "प्रीवेलिंग सिचुएशन इन बिहार" जो यहां पर नमूद किया गया है, उसको ध्यान में रखते हुए ऐसा लग रहा था कि शायद इस डिसकशन में हम लोग कुछ पार्टीसिपेट कर सकेंगे। लेकिन सदन का विचार जब मैंने देखा और किसी एक विशेष राजनीतिक पार्टी की ओर से नहीं बल्कि सदन के सारे ही नेताओं ने अपने-अपने विचारों को सदन के सामने रखा है और यह बात बिल्कुल सही कही सिकन्दर बख्त साहब ने कि एक ऐसा शख्स जिनके बारे में आज जो प्रसंग हमारे सामने खड़ा है उसके बारे में जानकारी या उसके बारे में चर्चा किसी तरीके से हड़बड़ी में नहीं होनी चाहिए। तो आज कोई मुझे ऐसा लगता नहीं कि कोई चर्चा करने के मूड में है और सदन का यह मूड ध्यान में रखते हुए मैं समझती हूं कि आज का डिसकशन कल तक हम इसको पोस्टपोन करें और मैं समझती हूं कि आज की सदन की कार्यवाही हम कल 11.00 बजे तक के लिए स्थगित कर दें।

The House stands adjourned till 11.00 A.M. tommorrow.

The House then adjourned at twenty-two minutes past four of the clock till eleven of the clock on Thursday, the 31st July, 1997.